1:3-21

मसीह का सच्चा ज्ञान

जीवन और भक्ति से संबंधित बातें (1:3-9)

[3]क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है। [4]जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं : ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। [5]इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विश्वास पर सद्‌गुण, और सद्‌गुण पर समझ, [6]और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति, [7]और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। [8]क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देगी। [9]क्योंकि जिसमें ये बातें नहीं, वह अंधा है और धुँधला देखता है, और अपने पिछले पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है।

पतरस ने झूठे उपदेशकों का सामना करने की बात को पुनर्जागृत किया है। सर्वप्रथम, उसने अपने पाठकों को स्मरण दिलाया कि उन्हें प्रेरितों के द्वारा जो सुसमाचार मिला है वह पर्याप्त है। उनको परमेश्वर में जीवन मिला है; और उनको आत्मिक उन्नति करने के लिए किसी प्रकार के स्रोत की कमी नहीं है। झूठे उपदेशक मसीहियों को यह कहकर लुभाने का प्रयास कर रहे थे कि उनके पास उन्हें देने के लिए बहुत कुछ थाः उनका ज्ञान प्रेरितों से बेहत्तर था। पतरस ने इन सबसे इनकार किया। उन पर उसने अपने कलम से तुरंत आक्रमण नहीं किया। मसीह की शिक्षा को सकारात्मक रूप से प्रस्तुत करने के लिए झूठे उपदेशों की उलझनों को समझने की आवश्यकता नहीं है। उसका प्रथम शब्द आश्वासन का शब्द था।

आयत 3. NASB के अनुसार इस आयत में व्यक्त किए गए विचार, दूसरी आयत के विचारों का विस्तारण हैं। अन्य अनुवाद, जैसे NRSV में यहाँ एक नया अनुच्छेद प्रारंभ किया गया है, जो पाँचवीं आयत में दिए गए उलाहने को विदित करता है। इस वाक्य का व्याकरण, कैसे भी क्यों न पढ़ा जाए, अटपटा है; फिर भी, NASB अनुवाद बेहत्तर विकल्प प्रस्तुत करता है। तीसरी आयत, पिछली आयत में व्यक्त किए गए विचारों को आगे बढ़ाता है। पतरस ने [परमेश्वर] **की**

पहचान को काल्पनिक विचार नहीं माना है। इस प्रकार की पहचान वह साधन है जिसके द्वारा उसका ईश्वरीय सामर्थ और भी प्रभावी हो जाता है। "पहचान" और "सामर्थ" जुड़वा विचार धाराएं हैं। क्योंकि इस पत्री के पाठकों ने "[परमेश्वर] की पहचान" प्राप्त की थी जिससे वे अब "उसकी ईश्वरीय सामर्थ" पहचानते थे। बदले में "ईश्वरीय सामर्थ" ने इन मसीहियों को **जीवन और भक्ति से संबंधित सभी चीजें** प्रदान की थी। "पहचान" शब्द 2 और 3 आयत को एक साथ बांधता है। पतरस और दूसरे प्रेरितों ने "पहचान" के बारे में जो बातें कहीं है उसमें किसी भी प्रकार की कमी नहीं है।

ऐसी संभावनाएं जताई जाती हैं कि पतरस ने जिन झूठे उपदेशकों का 2:1 में परिचय दिया है, का यह दावा था कि उन उपदेशकों को वह ज्ञान प्राप्त था जो उन पाठकों के प्रथम उपदेशकों को पता नहीं था। उन्होंने उस ज्ञान का दावा किया जो पतरस और दूसरे प्रेरितों के ज्ञान से श्रेष्ठ था। पतरस ने ज्ञान के महत्व को तुच्छ जानने से इनकार कर दिया। उसने दावा किया कि प्रेरिताई संदेश पहचान का स्रोत है। प्रेरित ने भजनकार के समान, जिसने यह लिखा, "यह मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मेरी ओर है" (भजन 56:9), भरोसा जताया। जब परमेश्वर के लोग, जो ज्ञान वह उन पर प्रकट करता है के सीमा क्षेत्र में रहते हैं तो उसका उद्देश्य पूरा होता है। "तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं और उसको अपने सम्मुख जानकर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा" (सभोपदेशक 8:12)।

इन मसीहियों पर "ईश्वरीय सामर्थ" दो प्रकार से प्रकट है। सर्वप्रथम, उन्हें "जीवन" मिला था। "जीवन" उन आत्मिक, अमूर्त लाभों का जिक्र करता है जिसका मसीही लोग आनंद उठाते हैं, जिसमें पापों की क्षमा, अनंत जीवन की आशा, परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप और आत्मा की शांति सम्मिलित है। द्वितीय, "जीवन," मसीही जीवन शैली की नैतिक जिम्मेदारी के साथ संबंधित है। पवित्र जीवन जीने का परिणाम "भक्ति" है जो ईश्वरीय सामर्थ से ही प्राप्त होता है। इस संदेश के द्वारा पतरस के पाठकों ने आत्मिक आशीषें प्राप्त की थीं जिसके परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के साथ-साथ जीवन बिताने लग गए थे। इसके साथ ही, उन्होंने भक्तिपूर्ण जीवन जीने की कला सीख ली थी जिससे परमेश्वर की सम्प्रभुता की प्रशंसा होती है। जिस तरह प्रथम सदी में प्रेरितों का संदेश, सारी आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त था, उसी तरह यह संदेश इक्कीसवीं सदी में भी पर्याप्त है। परमेश्वर के उपाय और आत्मा की प्रेरणा के द्वारा नये नियम में मसीहियों के लिए प्रेरितों का संदेश सुरक्षित पाया जाता है।

प्रेरितों का संदेश सुनने के बाद, इन मसीहियों ने जाना कि जितनी आशिषों का वे आनंद उठाते हैं वे परमेश्वर के पहल से ही उन्हें प्राप्त हुई हैं। यह वही है **जिसने हमें बुलाया है** और हमने जिसको नहीं ढूँढ़ा था। जब परमेश्वर की सृष्टि में उसके उद्देश्यों की पूर्ति होती है तो उससे केवल उसकी ही महिमा होती है; इस प्रकार परमेश्वर की बुलाहट, उसकी **अपनी महिमा और सदगुण** (श्रेष्ठता) के लिए ही है। "महिमा" शब्द पहाड़ पर मसीह की महिमा का पूर्वानुमान है जिसे पतरस

ने 1:17 में दोहराया है। यूनानी शब्द (ἀρετή, *आरेटे)* जिसका अनुवाद "सदगुण" किया गया है, यूनानी भाषा बोलने वालों के मध्य एक आम शब्द था, लेकिन नये नियम में इस शब्द का प्रयोग केवल पाँच बार ही किया गया है। उसमें से तीन इसी संदर्भ में है, यहाँ पर एक बार और 1:5 में दो बार प्रयोग किया गया है। अन्य दो अवतरण 1 पतरस 2:9 और फिलिप्पियों 4:8 में पाया जाता है। इस शब्द का तात्पर्य नैतिक खराई और चरित्र की ईमानदारी है। जब परमेश्वर, लोगों का आह्वान कर उनको उसके नाम का अनुकरण करने और उसकी महिमा करने के लिए कहता है तो इसके द्वारा स्वयं परमेश्वर की भलाई, न्याय और कृपा की अनुभूति होती है।

आयत 4. "अपनी ही महिमा और सद्गुण" की पुष्टि करने की प्रक्रिया के द्वारा, पतरस ने पुष्टि की कि **परमेश्वर ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं**। पतरस के मन में किस प्रकार की प्रतिज्ञाएं हैं, वह स्पष्ट नहीं हैं। संभवतः पुराने नियम में की गई प्रतिज्ञाओं को वह स्मरण कर रहा होगा। परमेश्वर ने नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद, यशायाह एवं अन्य भविष्यवक्ताओं के द्वारा प्रतिज्ञाएं दी हैं। युद्ध और बंधुआई के समय, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं ने इस्राएल को संभाले रखा और लोगों में आशा जगाए रखी। पतरस अपने पाठकों को स्मरण दिला रहा था कि वे "प्रतिज्ञाएं" उनके लाभ के लिए अब सिद्ध की जा रहीं हैं। जब मसीह इस संसार में आया तो उसके द्वारा परमेश्वर ने मानव जाति को इन "प्रतिज्ञाओं" की स्वीकृति दी।

दूसरी संभावना यह है कि ये वे "प्रतिज्ञाएं" हैं जो मसीह ने अपने शिष्यों को आश्वासन दिलाने के लिए कहीं। इस प्रकार मसीही लोग प्रभु के आगमन, भक्तिहीनों का न्याय और नई आकाश और पृथ्वी की स्थापना की आशा लगाए हुए थे। चूँकि वाक्य बाद में यह बताता है कि प्रतिज्ञा के वारिस होने का कारण उनका "ईश्वरीय गुण" में समभागी होने का परिणाम है, तो यह समझना अच्छा होगा कि ये वे प्रतिज्ञाएं हैं जो पुराने नियम के समय में दी गई थीं।

प्रतिज्ञाएं प्रदान करने के द्वारा, और यीशु में उनकी पूर्ति ने पतरस के पाठकों के लिए यह संभावनाएं उत्पन्न की थीं **कि वे उसके द्वारा ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाएं**। प्रेरित का मानना था कि कुछ मायने में मसीही होने का तात्पर्य परमेश्वर की "अपनी महिमा और सदगुण" में भागी होना है। एक विश्वासी परमेश्वर के स्वाभाव में कैसे समभागी हो सकता है? इसकी कई संभावनाएं हैं।

1. संभवतः पतरस केवल यह देखना चाहता था कि मनुष्य होने का अर्थ ईश्वरीय स्वभाव में समभागी होना है। वह अपने पाठकों से यह निवेदन कर रहा था कि वे ऐसा जीवन जीएं जिससे उनके सृजे जाने का उद्देश्य प्रतिबंब हो। परमेश्वर ने उनको अपना साझीदार बनाया था। उन्हें परमेश्वर के साझीदार जैसा व्यवहार करना चाहिए था।

2. प्रेरित उन्हें यह भी स्मरण दिलाना चाहता था कि जब उनका नया जन्म हुआ था – अर्थात जब उन्होंने मसीह को अपने पापों की क्षमा हेतु

बपतिस्मा लेकर पहन किया था और इस प्रकार उन्होंने पवित्र आत्मा का दान पाया था (प्रेरित 2:38) – तो वे परमेश्वर के स्वभाव में साझी होकर उसके साझीदार बन गए थे।

3. यह पौलुस के वक्तव्य कि जैसा मसीह का स्वभाव था तुम भी वैसा ही स्वभाव रखो, के समान है (फिलिप्पियों 2:5)। यदि यह ठीक है, तो "ईश्वरीय स्वभाव" में सहभागी होने का तात्पर्य मसीह के विचार और व्यवहार को आत्मसात करना है। यूहन्ना ने भी कुछ इसी तरह यह अनुमोदन करने के लिए लिखा कि मसीह के द्वारा विश्वासी परमेश्वर की संतान बन जाते हैं (यूहन्ना 1:12)।

4. दूसरी संभावना यह है कि भविष्य की ओर देखते हुए, पतरस अपने पाठकों को यह स्मरण दिलाकर लिख रहा था कि जब प्रभु वापस आएगा तो वे स्वर्गीय महिमा में उसके साथ एक हो जाएंगे। तब वे "ईश्वरीय स्वभाव" के समभागी हो जाएंगे।

जबकि इन सभी संभावनाओं की बहुत ही आकर्षक विशेषताएं हैं, लेकिन इसके बाद की आयतों से यह स्पष्ट हो जाता है कि पतरस के लिए, "ईश्वरीय स्वभाव" में समभागी होने का बहुत ही महत्वपूर्ण नैतिक परिणाम था। इसके साथ ही, उसने परमेश्वर की सामर्थ का वर्णन किया है जो जीवन और भलाई प्रदान करता है। इस कारण, "ईश्वरीय स्वभाव" में समभागी होना, उपरोक्त वर्णित विकल्पों में से दूसरा विकल्प इस विचार के समतुल्य है। इसका तात्पर्य नये जन्म का अनुभव करना है। जब वह अपने पाठकों को "ईश्वरीय स्वभाव" में समभागी होने के लिए कह रहा था तो संभवतः वह उनके हृदय परिवर्तन का उल्लेख कर रहा था।

ऐसा लगता है कि "ईश्वरीय स्वभाव" जैसे शब्दांश यूनानी विचार धारा से लिया गया है। बुद्धिजीवी, अपरिहार्य मानवीय जीवन के भ्रष्टाचार पर चर्चा करते थे। ज्ञानवादियों के अनुसार जब कोई आत्मिकता के किसी विशेष स्तर को प्राप्त कर लेता है तो वह तभी शारीरिक भ्रष्टाचार से छूट सकता है। पतरस के लिए, ईश्वरीय स्वभाव में समभागी होने का तात्पर्य मसीह में पाए जाने से है। प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के द्वारा, मसीह ने मनुष्यों का परमेश्वर से मेल-मिलाप कराया और उसके द्वारा **उस सड़ाहट से, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है**, छुड़ाया। पतरस के मन में "बुरी अभिलाषा," का तात्पर्य शारीरिक भ्रष्टाचार जो देह में की जाती के बजाय, नैतिक भ्रष्टाचार से है। बाद के आयत 2:19, 20 में वह इस विषय पर चर्चा करेगा कि किस प्रकार अभिलाषा लोगों को गुलाम बना देती है। "ईश्वरीय स्वभाव," में समभागी होने के लिए "इस संसार में व्याप्त भ्रष्टाचार" से मुक्त होना अनिवार्य है। ये सभी बातें मिलकर नैतिक निषेधाज्ञा का आधार बनाती है।

नये नियम के समय यहूदी लोग पलिस्तीन और इसके सीमा क्षेत्र के बाहर रहते थे जो पूरी तरह से यूनानी विचार धारा से लिप्त हो चुके थे। प्रेरित या संभवतः किसी बुद्धिजीवी सहायक ने यूनानी संस्कृति वाले यहूदी विश्वासियों के

समाज में सुसमाचार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए जानबूझकर यूनानी विचार धारा का सहारा लिया होगा।[1]

आयत 5. पिछली आयत के अभिकथन के आधार पर, पतरस अब नैतिक उलाहना देते हुए आगे बढ़ता है: **इसी कारण**, [उन्हें ऐसा होना चाहिए कि] **सब प्रकार का यत्न** करना था। यद्यपि पतरस ने बड़ी सरलता से यूनानी भाषा को मसीही विश्वास के अनुकूल बना दिया था, लेकिन उसने परमेश्वर के ज्ञान से नैतिकता का त्याग नहीं किया था। परमेश्वर इस बात की चिंता करता है कि लोग किस प्रकार व्यवहार करते हैं। यूनानी समाज में, नैतिकता और धर्म के मध्य बहुत सूक्ष्म संबंध था। मसीह में जीवन जीने के लिए, उच्च नैतिक सिद्धांत पर अधारित व्यवहार अनिवार्य था। यीशु के आदर्श पर आधारित व्यतीत करने वाले जीवन दो बातें करते थे: (1) परमेश्वर के नाम को महिमान्वित करना और (2) जिसने भी इस आदर्श का अनुकरण किया उसका जीवन श्रेष्ठ हो गया था। क्योंकि परमेश्वर ने मसीहियों को महान आज्ञाएं दी थी, क्योंकि वे "ईश्वरीय स्वभाव" में समभागी होते थे, इसलिए उन्हें किसी प्रकार का समझौता किए बिना गुणकारी जीवन जीने के लिए "सब प्रकार का यत्न" करना चाहिए था।

यूनानी संस्कृति के बुद्धिमान व्यक्तियों और दार्शनिकों का सामान्य अभ्यास यह था कि वे अपने विद्यार्थियों को गुण और अवगुणों की सूची प्रस्तुत करते थे। पौलुस और पतरस ने भी अपनी पत्री में इस विधि का अभ्यास किया है। पहला पतरस 3:8, 9 में, प्रेरित ने उन व्यवहारों की सूची प्रस्तुत की है जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है और 2:1 और 4:3 में, उसने अवगुणों की सूची प्रस्तुत की है। दूसरा पतरस में भी, प्रेरित ने मसीही व्यवहार का दिशा निर्देशन करने के लिए गुणों की सूची लिखने से अपने हाथों को नहीं रोका। पतरस की सूची विस्तृत सिद्धांतों के साथ कार्य करती है। यह विधि संग्रह से बढ़कर है। विधि संग्रह की स्पष्ट सीमाएं होती हैं। उदाहरण, यदि व्यवस्था यह कहती है कि सभी को यरूशलेम मंदिर जाना है और वर्ष में एक बार फसह मनाना है, तो इसका पता लगाने में कठिनाई नहीं होगी कि क्या किसी ने इस व्यवस्था का उल्लंघन किया है कि नहीं। व्यवस्था की आज्ञा मानने के व्यक्तिपरक तत्व न्यूनतम है। पतरस ने जिन गुणों की सूची जारी की है उसके लिए व्यक्तिपरक तत्व अधिकत्तम है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई कितना भी महान जीवन जी ले, तो उस व्यक्ति के जीवन में कभी ऐसा समय नहीं होगा जब वह कहेगा, "मैंने कर दिखाया। मैंने विश्वास को थामे रखा है। अब, मैं नैतिक रूप से सर्वोत्तम हूँ।"

पतरस ने जिन गुणों की सूची जारी की है उनके संबंधों को यूनानी भाषा से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करना कठिन है। "अपने विश्वास पर सदगुण जोड़ो" ["add to your faith virtue" (KJV)] शब्द समूह यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि एक सदगुण के ऊपर दूसरे सदगुण को जोड़ते जाना है। यह शब्दों के मध्य नजदीकी संबंध नहीं बताता है। NASB अनुवाद जो इस प्रकार है, **अपने विश्वास पर सदगुण** (नैतिक उत्कृष्टता) जोड़ो ("in your faith supply moral excellence") को जब पढ़ा जाता है तो यह इन शब्दों की विचार सार थाम लेता

है। इसका आशय यह है कि प्रत्येक सदगुण दूसरे सदगुण की ओर जाने की सोपान है। "विश्वास" एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति "नैतिक सद्गुण" प्राप्त करता है। "नैतिक सद्गुण" से वह "ज्ञान" की ओर अग्रसर होता है।

पतरस की सूची के हरेक शब्द एक पुस्तक का विषय-वस्तु हो सकता है। उसने इस सूची को एक छोर से "विश्वास" और दूसरे छोर से "प्रेम" के कोष्ठक से बंद कर दिया। मसीहियों के लिए "विश्वास" से बढ़कर और कोई दूसरा शब्द नहीं है जिसको वे सबसे अधिक प्रतिष्ठित मानते हैं। जब पौलुस ने लिखा, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है" (इफिसियों 2:8) तो उसने "विश्वास" को मसीही पहचान का आधार बनाया। "विश्वास" एक सक्रिय शब्द है। इब्रानियों 11:1 में लेखक ने संक्षिप्त परिभाषा प्रस्तुत की हैः "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" तब, अपने अपर्याप्त प्रयास समझने के बाद, वह ऐसा कहता है, "मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि विश्वास क्या है, इसके बजाय कि इसको मैं तुम्हारे लिए परिभाषित करूँ। विश्वास हाबिल है, जैसा उसने किया वैसा ही उसने व्यवहार किया। विश्वास हनोक है। विश्वास नूह है। विश्वास अब्राहम है।" "विश्वास" मानसिक मतिहीनता नहीं है; इसका हमारे व्यवहार के साथ घनिष्ठ संबंध है जिससे विश्वास उत्पन्न है। न भूखे बच्चे को खाना खिलाने से और न ही प्रभु को बपतिस्मा में पहनने से विश्वास त्यागा जा सकता है।

विश्वास से मसीह के पास आने के बाद, पतरस ने अपने पाठकों से आग्रह किया कि वे विश्वास को सदगुण की अगली सीढ़ी अर्थात "नैतिक सदगुण" (ἀρετή, *आरेटे*) पर चढ़ने के लिए पायदान के समान प्रयोग करें। दूसरा पतरस 1:3 में, प्रेरित ने दोहराया कि परमेश्वर ने विश्वासियों को अपनी महिमा और नैतिक सद्गुण के द्वारा बुलाया है। मसीहियों को उसी प्रकार के "नैतिक सद्गुण" में उन्नति करना है जिसे परमेश्वर ने प्रदर्शित किया है। यह शब्द धैर्य, विश्वसनीयता, और चरित्र की अनुरूपता पर रोशनी डालता है। जब एक विश्वासी अपना भरोसा परमेश्वर पर जताता है तो स्वभाविक रूप से यह उसके जीवन पर दृष्टिगोचर होता है।

झूठे उपदेशकों के लिए **समझ** एक महत्वपूर्ण शब्द था। ये उन कलीसियाओं में घुस आए थे जिनको पौलुस ने संबोधित किया था। यह प्रेरित के लिए भी एक महत्वपूर्ण शब्द था, लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि उसके सूची में यह न तो प्रथम या अंतिम शब्द था। मूर्तिपूजकों के गुणों की सूची में "समझ" को सदैव प्राथमिकता मिली है। दूसरा पतरस में इसको "विश्वास" और "नैतिक सद्गुण" के बाद स्थान मिला है। दूसरा पतरस 1:2, 3 में, परमेश्वर पर विश्वास करने और उद्धार पाने के लिए जब पतरस ने समझ को आवश्यक तत्व बताया तो उसके लिए उसने ἐπίγνωσις *(इपिग्नोसिस)* शब्द प्रयोग किया है, संभवतः जो इस श्रेणी का सबसे मजबूत शब्द है। इस आयत में "समझ" (γνῶσις, *ग्नोसिस)* का प्रयोग व्यवहारिक संदर्भ में किया गया है जो मसीही जीवन की उन्नति के लिए आवश्यक है।

जिस तरह पतरस ने झूठे उपदेशकों का सामना किया है उसी तरह पौलुस ने भी कुरिंथियों के मसीहियों का भी सामना किया है जो अपने ही ज्ञान से आसक्त थे। पौलुस ने कुरिंथियों को आड़े हाथों लिया है। "हम जानते हैं कि हम सबको ज्ञान है" उसने मजाक किया। फिर उसने जारी रखा, "ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है" (1 कुरिंथियों 8:1)। "विश्वास" के साथ प्रारंभ करके और विश्वास के द्वारा "नैतिक सद्गुण" तक बढ़ने के बाद "समझ" प्राप्त करना ही मसीही ध्येय होना चाहिए। तब भी "समझ" स्व-श्रेष्ठता के लिए नहीं होना चाहिए। "समझ" दूसरे गुणों के संदर्भ में अनुभव किए जाना वाला गुण है। यह तब गुण नहीं रह जाता है जब कोई इसे परमेश्वर के बारे में नेतृत्व करने का साधन बना लेता है और उसे (परमेश्वर) को मनुष्य के सूरत में बदल देता है।

आयत 6. समझ, **संयम** की ओर बढ़ने का अगला पायदान है। पतरस का मसीही गुण और पौलुस का "आत्मा के फल" (गलातियों 5:22, 23) में केवल तीन गुण ही सामान्य है। उनमें से दो "विश्वास" और "प्रेम" हैं, यद्यपि NASB गलातियों में इसे "विश्वासयोग्यता" अनुवाद करता है। तीसरा शब्द "संयम" (ἐγκράτεια, *एन्क्राटैया*) दोनों सूचियों में एक जैसा है। नये नियम में इसके अलावा एन्क्राटैया शब्द का उल्लेख प्रेरित 24:25 में पाया जाता है, जहाँ पौलुस ने फेलिक्स हाकिम के साथ "धार्मिकता, संयम और आने वाले न्याय" के बारे में वाद-विवाद किया था।

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग अपनी इच्छा और आवेग पर नियंत्रण रखें। वह संभवता के भीतर ही इन बातों की अपेक्षा करता है। लोग अपने क्रोध, लालच, विचार, और व्यवहार पर नियंत्रण रख सकते हैं। न तो पौलुस और न ही पतरस ने इस बात की ओर ईशारा किया है कि इन गुणों का अभ्यास करना आसान है। कुछ लोगों को अपनी अभिलाषा पर नियंत्रण करने में दूसरों से अधिक कठिनाई होती है। किसी भी हालात में किसी को भी अपने आपको क्रोध या किसी अन्य प्रकार की परीक्षा में डालने की अनुमति नहीं दी गई है। "संयम" बरतने वाले बनने का पहला कदम यह है कि वह इस बात को स्वीकार करे कि यह एक वास्तविक अपेक्षा है। सर्वप्रथम एक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि वह अपने पर नियंत्रण रख सकता है; तब वह यह कार्य कर सकता है।

"संयम" **धीरज** के लिए मंच के समान है। KJV "धीरज" (ὑπομονή, *ह्यूपोमोने)* को "patience" (धैर्य) अनुवाद करता है। जबकि यह सत्य है कि "patience" (धैर्य) और "perseverance" (धीरज) का अर्थ कभी-कभी एक समान लगता है, लेकिन बहुधा "patience" (धैर्य) शब्द निराशा या क्षोभ की दशा में अधिक सक्षम जान पड़ता है। इस संदर्भ में "patience" (धैर्य) के लिए दूसरा यूनानी शब्द की आवश्यकता है। पतरस ने जिस शब्द का प्रयोग किया है वह दीर्घायु, दृढ़ता, और निरंतर सहनशीलता को निर्दिष्ट करता है। यह वह गुण है जिसके द्वारा एक मसीही निराशा से पार हो जाता है, परीक्षा से वापस लौट आने में सहायता करता है, और जिस विश्वास का उसने अंगीकार किया है उस विश्वास में बने रहने में उसकी सहायता करता है। पतरस ने "धीरज" के लिए

अच्छा यूनानी शब्द का चुनाव किया है।

विश्वास में धीरज धरने के द्वारा मसीही लोग **भक्ति** का पीछा करते हैं। यह शब्द, कार्य के बजाय स्वभाव की ओर अधिक अभिविन्यस्त है। यह मन की उपस्थिति का प्रतीक है जहां परमेश्वर हमेशा निकट होते हैं। यह मन की एक पवित्र सीमा है जो उसे जीवन के हर क्षेत्र में खींचती है। एक भक्त सिर झुकाकर कठिन चुनाव करता है; जीवन के सुखों और दुःखों का सामना परमेश्वर के साथ हाथों में हाथ लेकर किया जा सकता है। इसका अर्थ "नैतिक सद्गुण" और "संयम" के साथ अतिच्छादन करता है। इस शब्द का अनुवाद कभी-कभी "मसीही भक्ति" या "धर्म" भी किया जाता है। पौलुस ने इस शब्द का प्रयोग 1 तीमुथियुस 6:3 में "उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है" शब्दांश में किया है। पहला तीमुथियुस 6:11 के गुणों की सूची में पौलुस ने "भक्ति" को शामिल किया है।

आयत 7. नियम पर नियम बढ़ाते हुए पतरस **भाईचारे की प्रीति** पर आया। परमेश्वर के प्रति भक्ति को अपने संगी मनुष्यों के प्रति स्नेह और दयालुता के व्यवहार से विच्छेदित नहीं करना है। सदगुणों का क्रम महत्वपूर्ण है। अपने पड़ौसी के प्रति शालीनता और दयालुता **भक्ति** से ही आती हैं। यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "भाईचारे की प्रीति" (φιλαδελφία, *फिलाडेल्फिया)* हुआ है, अधिकांश अंग्रेज़ी बोलने वालों को ज्ञात है। पेन्सिल्वेनिया का एक महान शहर अपने आप को "भाईचारे की प्रीति का शहर," फिलेडेलफिया कहता है। यह ऐसा शब्द है जो अपने में एक गर्म भावनात्मक प्रेम के साथ भाईचारे को रखता है। यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे प्रत्येक मनुष्य के प्रति प्रेम, सत्कार तथा आदर रखें; परन्तु शिष्य उनके प्रति जो उनके साथ विश्वास साझा रखते हैं एक विशेष हृदय-संबंध सुरक्षित रखते हैं। पौलुस ने इसे भली-भांति कहा, "इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष कर के विश्वासी भाइयों के साथ" (गलतियों 6:10)।

सूची के अन्तिम शब्द को किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है, या संभवतः इसे ही सबसे अधिक व्याख्या की आवश्यकता है। पतरस का निष्कर्ष था कि इन सभी विलक्षण सदगुणों को **प्रेम** की नींव होना चाहिए। यह सब कुछ का समावेश कर लेने वाला शब्द है, मसीही व्यवहार के लिए नए नियम का सर्वोच्च शब्द। यीशु ने कहा कि इसे उसके लोगों का सर्वोत्तम गुण होना चाहिए (यूहन्ना 13:35)। यीशु ने कहा कि सभी आज्ञाओं में से परमेश्वर के प्रति तथा अपने संगी मनुष्यों के प्रति प्रेम रखना ही सबसे बड़ी आज्ञा है (मरकुस 12:29-31)। ज्ञानी पुरुषों ने पुस्तकें लिखीं हैं जो इस शब्द के अर्थों को गहराई से खोज निकालने का प्रयास करती हैं। हम कम से कम इतना तो कह सकते हैं कि "प्रेम" का अर्थ आँखों में आँसू लिए हुए भावनाएं रखने से बढ़कर है। यह अपने आप को दूसरे के स्थान पर रखकर उस व्यक्ति के लिए सबसे भले व्यवहार को करना है, चाहे ऐसा करना स्वयं के लिए असुविधाजनक हो। यह वह सर्वोच्च शब्द है जो किसी के लिए चिन्ता को स्वयं से भी बढ़कर, स्वयं की परवाह से बढ़कर, औरों की

आवश्यकताओं की ओर निर्देशित करता है।

आयत 8. प्रेरित ने यह स्पष्ट किया कि जो शब्द उसने अभी प्रयोग किए थे वे सारांश मात्र नहीं थे; वह केवल सैद्धांतिक बात ही नहीं कर रहा था। अपने पाठकों को मध्यम पुरुष समान संबोधित करते हुए, पतरस ने कहा कि जब ये सदगुण जड़ पकड़ेंगे तो उन्हें **निकम्मे और निष्फल न होने देंगे**। तात्पर्य यह है कि कुछ लोग मसीही होने का दावा करते हुए भी "निकम्मे" और "निष्फल" थे। याकूब ने भी यही बात कही जब उसने लिखा, "कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है" (याकूब 2:20)। चाहे सैद्धांतिक धारणाओं को अपना लेने के द्वारा कोई उदासीन दार्शनिक हो सकता है, परन्तु मसीहियत सही धारणाओं और शब्दों के उपयोग से कहीं अधिक बढ़कर है। इसके लिए जीवन को सही करना होता है। लिटोटेस भाषा को ऐसे प्रयोग करने की विधि है जिसमें विपरीत पर जोर देने के द्वारा विषय पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। पतरस ने लिटोटेस का प्रयोग किया। सकारात्मक रूप में, उसका सन्देश था कि जिन गुणों को प्रत्यक्ष रखा गया है वे मसीही को उपयोगी और फलवंत बनाते हैं।

पतरस यह स्वीकार नहीं कर सकता था कि झूठे शिक्षकों को उनके ज्ञान के कारण प्रचार का अधिकार है। वास्तव में, उन के पास ज्ञान होने का दावा, "निकम्मा" और "निष्फल" था। प्रेरित ने जिन सदगुणों को 1:5-7 में प्रत्यक्ष रखा था, उनसे प्रेरणा पा कर परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने से, उसके लोग **प्रभु यीशु मसीह की पहचान में** उपयोगी और फलवंत हो जाते हैं। प्रेरित फिर से "ज्ञान" (ἐπίγνωσις, *एपिगिनोसिस)* के लिए उसी शब्द पर लौट कर आया जिसे उसने 1:2, 3 में उपयोग किया था। इसके तात्पर्य को थामे रखने के लिए NASB इसका अनुवाद "सच्चा ज्ञान" करती है यद्यपि यूनानी में "सच्चा" के लिए कोई शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। झूठे शिक्षकों के स्वार्थी ज्ञान की तुलना में, "सच्चे ज्ञान" की विषय-वस्तु "हमारा प्रभु यीशु मसीह" है। यह दूसरों पर नियंत्रण प्राप्त करने या अपने आप को बधाई देने का साधन नहीं है। "सच्चा ज्ञान" नैतिक फल लाता है। यद्यपि "पवित्र" शब्द यहाँ प्रयुक्त नहीं हुआ है, प्रतीत होता है कि पतरस वैसे ही व्यवहार के लिए अनुरोध कर रहा था जैसा कि 1 पतरस 1:15, 16 में वर्णित है। ज्ञान की विषय-वस्तु 1:3 में परमेश्वर की महिमा था। इस आयत में ज्ञान की विषय-वस्तु पवित्रता है।

आयत 9. सकारात्मक रीति से, मसीही सदगुणों का अभ्यास करना उपयोगी और फलवंत बनाएगा। नकारात्मक रीति से, पतरस ने कहा, **जिसमें ये बातें नहीं, वह अंधा है और धुँधला देखता है।** निकम्मा और निष्फल होना इस बात का प्रमाण है कि "ये सदगुण" विद्यमान नहीं हैं। जीवन में मसीही सदगुण ना होना यह दिखाता है कि व्यक्ति मसीही सन्देश को सुनने, समझने, और मन में बैठा लेने में असफल रहा है। चाहे वह देखने का दावा करता है, प्रेरित ने कहा, वह "अंधा" है। समझने में असफल होना बताने के लिए अन्धा होना कहना एक आम रूपक अलंकार है (देखें 2 कुरिन्थियों 4:4)।

इस वाक्यांश में प्रयुक्त शब्दों का संयोजन विचित्र है। उसके सबसे उत्तम रूप

में देखा जाए तो एक साथ "अन्धा और धुंधला देखना" लिखना अनावश्यक है। उसके सबसे बुरे रूप में देखा जाए तो यह परस्पर विरोधी है। "धुंधला" देखने वाला व्यक्ति कुछ सीमा तक तो देख सकता है। कोई एक साथ ही "अंधा" और "धुधला" देखने वाला नहीं हो सकता है। जिस शब्द को "धुंधला" (μυωπάζω, *मुओपाज़ो)* अनुवाद किया गया है वह बहुत कम प्रयोग होता है। यह नए नियम में केवल यहीं आया है। शब्द के स्त्रोत और विकास के आधार पर, कुछ का मानना है कि इसका अर्थ "पलक झपकना" या "आँखें बन्द करना" होता है। ऐसे में तात्पर्य होगा कि व्यक्ति सत्य तथा मसीही शिक्षओं की माँग के प्रति जान-बूझकर अपनी आँखें मूँदने के द्वारा अन्धा हो जाता है। यद्यपि यह व्याख्या आकर्षक है, शब्द के स्त्रोत और विकास के आधार पर उसकी परिभाषा देना संदिग्ध होता है। यदि पतरस जान-बूझकर अंधे होने की बात कर रहा होता, तो उसने शब्द को उस समयानुसार अन्जानी रीति से प्रयोग किया था। अधिक संभावना यह है कि प्रेरित का उद्देश्य अंधेपन के स्वभाव के बारे में कहना था। अभिप्राय यह है कि "ऐसा व्यक्ति अंधेपन की सीमा तक धुँधला देखने लगता है।" संभवतः इस व्याख्या के कारण ही NIV में शब्दों का क्रम पलट दिया गया है।

जो "धुँधला" देखते हैं, पतरस उनके लिए क्या कह रहा था? रूपक अलंकार क्या चित्रण करता है? "धुँधला" देखने वाला केवल उन्ही वस्तुओं को देख पाता है जो बहुत निकट होती हैं। वह केवल तुरंत होने वाले प्रभाव ही देख सकता है। वह केवल उस पल के रोमाँच, स्वीकृति, और संतुष्टि में ही रुचि लेता है। उसमें मसीही चरित्र की गहराई कदापि नहीं है। उसके लिए सिद्धांत परेशान करने और ध्यान बँटाने वाला है। वह विचार नहीं करना चाहता है; वह परमेश्वर तक पहुँचने के लिए अनुभूति का सहारा लेना चाहता है। भावनात्मक अनुभव उसके लिए मनन करने का विकल्प होते हैं। किसी बात के संबंध में, उसके लिए अधिक महत्वपूर्ण वह है जो वह स्वयं उस बात के विषय में अनुभव करता है न कि वह जो परमेश्वर द्वारा कहा गया है। परमेश्वर ने जो कहा है वह उसे न तो जानता है और न ही जानना चाहता है। दुर्भाग्यवश वर्तमान पश्चिमी संस्कृति में जो कुछ मसीहीयत के अन्तर्गत हो रहा है, उसके लिए धुँधलापन एक सही विवरण है।

मसीही सदगुणों का अभ्यास न करना न केवल "धुँधला" देखना है, वरन यह कृतघ्न होने का भी संकेत है। ऐसा व्यक्ति **अपने पिछले पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है**। भक्ति का जीवन अधिकांशतः स्मरण रखने और कृतज्ञ होने का परिणाम है। इस्त्राएल को सब्त का दिन मानना था, यह स्मरण रखने के लिए कि परमेश्वर ने उन्हें मिस्त्र से छुड़ाया था (व्यवस्थाविवरण 5:15)। लोगों को यह आज्ञा देने के पश्चात कि वे निःसहाय और बलहीनों के प्रति दयालु रहें, मूसा ने लिखा, "और इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्त्र देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया; इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूं" (व्यवस्थाविवरण 15:15)। वह जो भक्ति का दावा करता है परन्तु मसीही सदगुणों से रहित है, वह "भूल बैठा है" कि परमेश्वर ने उसे शुद्ध किया है जिससे कि वह ईश्वरीय स्वभाव को धारण कर ले (1:4)। उसके द्वारा अविरल पापों को

करते रहना दिखाता है कि वह "भूल बैठा है" कि परमेश्वर ने उसे पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाया है।

अनन्तकालीन राज्य में प्रवेश (1:10, 11)

[10]इस कारण हे भाइयो, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली भाँति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे तो कभी भी ठोकर न खाओगे; [11]वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे।

बुलाए और पवित्र किए जाने के बाद, मसीही के लिए अपने चुनाव को सिद्ध न होने देना संभव है। पतरस के पाठकों ने अपनी मसीही यात्रा का आरंभ तो किया, परन्तु झूठे शिक्षकों ने उनके मार्ग में गंभीर बाधाएं डाल दीं। उनके सामने प्रलोभन था कि वे मसीहियत को एक अच्छे लोगों का समूह बना दें जो बैठ कर परमेश्वर के मार्गों के बारे में चर्चा करता रहे। परमेश्वर की माँग इससे बढ़कर है। जीवन में सुधार दिखना विश्वास के दावे का अनिवार्य परिणाम है। परमेश्वर ने बुलाया है, मसीही को बुलाए जाने का प्रत्युत्तर देना है। परिश्रम करना कार्यकारी समय की माँग है।

आयत 10. अपने सन्देशों और पत्रियों में महत्वपूर्ण समयों पर पतरस का स्वभाव था कि वह शब्द **भाइयों** (प्रेरितों. 2:29; 3:17; 15:7) या उसके समान शब्द "प्रियों" (1 पतरस 2:11; 4:12; 2 पतरस 3:1, 8, 14, 17) का प्रयोग करे। शब्द "भाइयों" स्मरण करवाता है कि प्रेरित अपने पाठकों के साथ एक मन और विचार था। उसके निवेदन में कोई गुप्त बात, कोई छिपा हुआ उद्देश्य नहीं था। प्रेरित ने कहा कि परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था। परमेश्वर ने उन्हें अपनी महान प्रतिज्ञाएं प्रदान की थीं। उसने उन्हें ईश्वरीय स्वभाव का सहभागी बनाया था, परन्तु उन्हें उसकी आशिषों को हल्के में नहीं लेना था।

शत्रु बलवान है। बुलाया जाना और चुना जाना हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। ऐसा न हो कि पाया हुआ उद्धार सिद्ध न होने पाए। प्रेरित ने कहा **इस कारण भली भाँति यत्न करते जाओ।** आयतें 5 से लेकर 9 तक परिश्रमी होने के निवेदन के अन्तर्गत हैं।

नए नियम में शायद ही कोई अन्य आयत होगी जहाँ परमेश्वर की सार्वभौमिकता और मनुष्यों की स्वेच्छा इतनी नाज़ुक रीति से आमने-सामने हों। खोए हुए जन परमेश्वर के **बुलाए तथा चुने जाने** के अनुसार मसीह के पास आते हैं और जीवन पाते हैं । प्रश्न यह है कि परमेश्वर अपने राज्य के लिए लोगों को कैसे "बुलाता और चुनता" है। क्या उसका चुनना कोई मनमानी इश्वरीय आज्ञा है, बीते अनन्तकाल में किया गया मनमाना चुनाव, या परमेश्वर सुसमाचार द्वारा बुलाता और चुनता है? यदि यह दूसरी बात सत्य है, तो इसका अर्थ है कि जो कोई मसीह का सन्देश सुनता है उसे निर्णय लेने के लिए बुलाया गया है। जो उस

सन्देश पर विश्वास करते और उसका पालन करते हैं वे, इस तथ्य के आधार पर, चुने और निर्वाचित हैं। परमेश्वर का बुलाना एक माँ का अपने दो बच्चों को भोजन के लिए बुलाने के समान है। एक किसी और बात में व्यस्त है और नहीं आता है। दूसरा भाग कर मेज़ पर आ जाता है। उसने एक प्रकार से दोनों को बुलाया, परन्तु केवल वह जो आकर मेज़ पर बैठा सही बुलाया हुआ है।

पौलुस ने कहा कि थिस्सुलुनीकिया के मसीही, सुसमाचार के प्रचार के द्वारा बुलाए गए (2 थिस्सुलुनीकियों 2:14)। परमेश्वर ने पहल की है। उसने सभी मनुष्यों के लिए सन्देश द्वारा हाथ बढ़ाया है। जो सुनता है वह या तो सुसमाचार का पालन करता है या उसका इन्कार करता है (रोमियों 2:8; 2 थिस्सुलुनीकियों 1:8; 1 पतरस 4:17)। पतरस ने इस विचार को इस आयत में और अधिक विकसित किया। उसने कहा कि विश्वासी को न केवल स्वेच्छा से "विश्वास के पालन" का निर्णय करना है (रोमियों 1:5; 16:26), वरन उसे "यत्न से" अपने "बुलाए और चुने जाने" को **सिद्ध भी करना** है। सुसमाचार की अनिवार्यताओं के प्रति मानवीय प्रत्युत्तर न केवल बुलाए हुए होने का निर्णायक गुण है वरन सिद्ध बुलाए हुए होने का भी।

अनुवाद में NASB न केवल शब्द "उसका" जोड़ देती है, वरन उसे बड़े अक्षर में लिखने के द्वारा यह चिन्ह देती है कि बुलाने में परमेश्वर का कार्य ही मुद्दा है। वास्तव में, इन शब्दों के साथ जुड़ा एकमात्र सर्वनाम द्वितीय पुरुष बहुवचन "तुम्हारे" है। इसके अतिरिक्त, क्रिया "बनाना" यूनानी मध्य ध्वनि है, "अपने लिए निश्चित करना।" इस बात में NASB के अनुवादकों का कैल्विनवादी पक्ष प्रकट है। इससे पिछली आयत (1:9) में, व्यक्तिगत विश्वासी विषय था। पतरस विश्वासियों से आग्रह कर रहा था कि मसीह में आने के समय अनुभव किए गए अपने "बुलाए और चुने जाने" को यत्न से सिद्ध करें। इन शब्दों का और अच्छा अनुवाद है, "अपने बुलाए और चुने जाने को सिद्ध करने के लिए यत्न से अपना सर्वोत्तम प्रयास करो।"

अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए, पतरस ने जोड़ा, क्योंकि **यदि ऐसा करोगे तो कभी भी ठोकर न खाओगे। ठोकर खाना एक वास्तविक संभावना है।** कभी-कभी लोग "सत्य से भटक" जाते हैं (2 तीमुथियुस 2:17, 18)। इसीलिए पतरस ने यत्न का आग्रह किया। पतरस के पाठक परमेश्वर के "बुलाए और चुने जाने" को सिद्ध करने का आनन्द कब तक लेते रहेंगे? पतरस का उत्तर था "जब तक इन बातों का अभ्यास करोगे।" तात्पर्य था कि "इन बातों" का अभ्यास न करने से वे "बुलाए और चुने जाने" की सिद्धता से वंचित रह जाएंगे। "ये बातें" वे मसीही सदगुण हैं जिन्हें पतरस ने इससे पूर्व की आयतों में रखा था। मसीही होना कोई ज्ञानी होने का खेल नहीं है। यह वाक्यांशों को सही समझने से बढ़कर है। यह ऐसे चरित्र का निर्माण करना है जो मसीह और उसकी शिक्षाओं के अनुरूप है।

आयत 11. जब विश्वासी "इन बातों" का अभ्यास करता है, तो वह "कभी ठोकर नहीं खाएगा।" **इस रीति से अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करेगा।** कलीसिया के लिए प्रयोग किए गए सभी रूपक अलंकारों (जैसे कि "देह,"

"परिवार," "घराना," "मन्दिर") में "राज्य" सबसे अधिक प्रयुक्त हुआ है। भविष्यद्वक्ताओं ने एक ऐसे राज्य का पूर्वाभास किया था जहाँ शान्ति का राज्य होगा (देखें यशायाह 9:6, 7)। यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाला यह प्रचार करता हुआ आया, "स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है" (मत्ती 3:2)। पौलुस के अनुसार, परमेश्वर ने हमें "अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया" है (कुलुस्सियों 1:13)। नए नियम में केवल यहीं पर कलीसिया को "अनन्त राज्य" कहा गया है[2], यद्यपि विशेषण अन्य बातों जैसे अनन्त महिमा (2 कुरिन्थियों 4:17) और अनन्त उद्धार (इब्रानियों 5:9) के लिए भी लागू है। पुनरुत्थान के बाद के पहले पिन्तकुस्त को "अनन्त राज्य" अस्तित्व में आ गया। पहली बार, प्रेरितों 2 में लोगों ने पूछा, "हम क्या करें?" उन से कहा गया, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों 2:37, 38)। बचाए हुए जन **हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह** के अनन्त राज्य को संस्थापित करते थे और करते हैं।

जो मसीही सदगुणों का अभ्यास नहीं करते हैं वे ठोकर खाते हैं। इस प्रकार वे अपने बुलाए और चुने जाने को सिद्ध करने नहीं पाते हैं। आयतें 10 और 11 यह स्पष्ट कर देती हैं कि किसी को ठोकर खाकर गिरने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर ने "अनन्त राज्य" में प्रवेश न केवल उपलब्ध करवाया है, **वरन बड़े आदर के साथ उपलब्ध करवाया है**। पहल परमेश्वर की है। राज्य अनन्त है क्योंकि इस युग की कलीसिया प्रभु के लौट कर आने पर अस्तित्व में आने वाले महिमामय राज्य में घुल जाएगी। संपूर्ण नए नियम में मसीह में जीवन का एक "विद्यमान, परन्तु वर्तमान नहीं" भाव व्याप्त है। एक ओर तो, विश्वासी परमेश्वर के राज्य की आशिषों का आनन्द लेते हैं। परमेश्वर के साथ उनकी अनन्त सहभागिता का आरंभ हो गया है। दूसरी ओर, परमेश्वर के साथ समय विहीन विश्राम और शान्ति के एक काल की प्रत्याशा है जिसे अभी अस्तित्व में आना है। इस जीवन में और आने वाले जीवन में भी, प्रतिफल का मूल्य जीवन जीने की विश्वासयोग्यता के सीधे अनुपात में है।

सुधि दिलाने के लिए (1:12-15)

[12]इसलिये यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है उसमें बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूँगा। [13]मैं यह अपने लिये उचित समझता हूँ कि जब तक मैं इस डेरे में हूँ, तब तक तुम्हें सुधि दिला दिलाकर उभारता रहूँ। [14]क्योंकि यह जानता हूँ कि मेरे डेरे के गिराए जाने का समय शीघ्र आने वाला है, जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझ पर प्रकट किया है। [15]इसलिये मैं ऐसा यत्न करूँगा कि मेरे कूच करने के बाद तुम इन सब बातों को सर्वदा स्मरण कर सको।

यहाँ पहुँचकर पत्री में पतरस के संबोधन में अचानक एक परिवर्तन है। उसने

पहले रुचि लेने वाले एक शिक्षक, एक सह-तीर्थयात्री जो अपने पाठकों के साथ परमेश्वर की महिमा और उत्तमता बाँटना चाहता है, के समान लिखा था। उस योग्यता में उसने उन से निवेदन किया था कि वे यत्न करें। वह उन्हें उन प्रतिज्ञाओं के बारे में स्मरण करवा चुका था जो उन में पूरी हो चुकी थीं। जबकि उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का लाभ उठाया था, पतरस ने उन्हें चिताया कि सदगुणों के अभ्यास के द्वारा और भी महान आशिषें मिलनी थीं।

नींव रखने के पश्चात, प्रेरित व्यक्तिगत हो गया। उसने वृतांत में अब प्रभु का निकट सहयोगी बनकर प्रवेश किया। उसने उनके लिए यीशु के साथ के कुछ अनुभव दोहराए। घटनाएं बिखरी हुई नहीं थीं। उसने उन घटनाओं से लिया जो उसके अधिकार की पुष्टि करती थीं। प्रेरित के पास झूठे शिक्षकों को, जो कलीसिया में पैठ बना रहे थे, सही करने का अधिकार था क्योंकि वह प्रभु को व्यक्तिगत रीति से, सदेह जानता था।

आयत 12. लूका ने लिखा कि अथेने में दार्शनिक थे "जो वहां रहते थे नई नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे" (प्रेरितों 17:21)। इसकी तुलना में, पतरस ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि उसके पास कुछ नया नहीं था। वरन वह उन्हें उन बातों की ओर वापस बुलाना चाहता था जिन पर उन्होंने आरंभ से विश्वास किया था। प्रेरित ने लिखा, **मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूँगा**। वह इस विषय पर 3:1 में फिर लौट कर आया: "सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूँ।"

फ्रैड बी. क्रैडौक ने देखा कि ऐसा बहुत सा मसीही प्रचार है जो सुधि दिलाने के द्वारा मन में हलचल करता है।[3] आराधना के सामूहिक अनुभव में, प्रचारक मिस्र में मूसा के बचपन, इस्राएल के जंगल में होने, दाऊद और गोलियत, भविष्यद्वक्ताओं, बाबुल की बन्धुआई, यूहन्ना बप्तिसमा देने वाला, यीशु के दृष्टांतों, जीवित हो उठे प्रभु की उत्तेजनात्मक, और मसीहियत के फैलने की कहानियों को बताता है। अधिकांश सुनने वालों के लिए, इनमें कोई नई बात नहीं है। प्रत्येक जन जो सुनता है, उससे उसके मन में उसका विश्वास दृढ़ होता है। वह अचेतन ध्यान करता है, "हाँ ये मेरे लोगों की कहानियाँ हैं। ये हमें बताती हैं कि हम कौन हैं और क्या विश्वास करते हैं। इनसे हमारी आशा परिभाषित होती है और हम में भलाई की प्रेरणा आती है।"

अनुवाद उस अटपटी यूनानी का कम ही संकेत देते हैं जो इस आयत से आरंभ होती है। पतरस ने भविष्यकाल का प्रयोग किया परन्तु "मैं सदा तैयार रहता हुआ रहूँगा," या "मैं सदा तैयार रहने के लिए रहूँगा" का अर्थ बनाना कठिन है। क्योंकि यूनानी अटपटी है, इसलिए यह जानना कठिन है कि प्रेरित क्या कहना चाह रहा था।[4] यहाँ NASB का लेख संदर्भ को ध्यान में रखते हुए है। वह इस अर्थ की अनुमति देता है कि "मैं सदा यत्न करता रहूँगा कि तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाऊँ।" पतरस के इस यत्न में वर्तमान पत्री सम्मिलित थी, परन्तु आयत 15 से प्रतीत होता है कि उसके मन में कुछ अन्य प्रयास भी थे जिन्हें उसे अभी करना शेष था (देखें 1:15 की टिप्पणियाँ)।

प्रेरित सुधि दिलाने में कुछ सतर्क था। उसने अपने पाठकों को अपना साथी बनाया और उनका सहयोगियों समान आलिंगन किया। सुधि दिलाना न तो उसके पाठकों के विश्वास की और न ही उनके ज्ञान की आलोचना थी। पतरस ने कहा कि सुधि दिलाना महत्वपूर्ण है **चाहे तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है उसमें बने रहते हो। इसमें संदेह नहीं कि झूठे शिक्षकों ने कुछ मसीही समूहों में पैठ बना ली थी।** प्रेरित ने अपने पाठकों को चतुराई से सामान्य विषय में पकड़ लिया। क्योंकि उन्होंने प्रेरितों को सुना था, उन्हें झूठे शिक्षकों और उनके व्यवहार को स्वीकार करने में सचेत होना चाहिए था। वे "सत्य में स्थिर किए गए" थे। पतरस को "सत्य" को कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं थी। वह आधुनिक संस्कृति की प्रत्येक "सत्य" को सापेक्षिक बनाने की प्रवृत्ति से बहुत दूर था। उसके पाठकों को कोई संदेह नहीं था कि मसीह में "सत्य" उन्हें सुलभ था।

आयत 13. पतरस अपने प्रेरित होने के उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक था। वह इसे **उचित**, या करने के लिए सही बात समझता था कि यीशु मसीह का प्रेरित विश्वासियों को उस सन्देश पर वापस लेकर आए जिसे उन्होंने ग्रहण किया था। यह करने के लिए सही था क्योंकि पतरस जानता था कि उसका यह **डेरा** अस्थायी है। पतरस ने सुझाव दिया कि उसके पास "इस डेरे" में उन्हें सुधि दिलाने के लिए और अधिक अवसर संभवतः न मिले। 1 पतरस में पाठक "परदेशी और बहिष्कृत" थे। इस पत्री में शारीरिक देह को "डेरा" कहना जीवन के एक प्रकार से तीर्थयात्रा होने के भाव को ज़ारी रखता है। यह धर्मसिद्धांत का विषय है जिसकी जड़ें पुराने नियम में बहुत गहरी हैं। साथ ही यह यूनानी लेखकों में आम पाया जाने वाला अभिप्राय भी है।

चाहे यरूशलेम में या रोम में मसीही समाज का अगुवा होना जोखिम भरा था। स्तिफनुस (प्रेरितों 7:58, 59) और याकूब (प्रेरितों 12:1, 2) मारे जा चुके थे। पतरस का भी मृत्यु से सामना हो चुका था (प्रेरितों 12:3, 4)। जिस शब्द का अनुवाद "सांसारिक निवास" हुआ है उसका शब्दार्थ "तम्बू" (σκήνωμα, *स्केनोमा)* है। यह एक बहुरूपी रूपक अलंकार है परन्तु आधुनिक संस्कृति में ठीक से अनुवाद नहीं हो पाता है। पतरस के लिए उसकी शारीरिक देह अस्थायी निवास स्थान था, जो जब भी मृत्यु का समय आए, गिराया जाकर पीछे छोड़ा जा सकता था।

यूनानी विचारधारा में, शरीर वह स्थान था जहाँ आत्मा बन्दी थी। जब देह मर जाती थी तब आत्मा मुक्त हो जाती थी। व्यक्ति का तत्व उसकी आत्मा थी। बाइबल की शिक्षा है कि व्यक्ति शरीर और आत्मा का रहस्यमयी मिश्रण है। शरीर के बाहर अस्तित्व पर यहूदी कभी ध्यान नहीं देते थे। जब पौलुस ने आने वाले संसार में जीवन की बात की तो वह पुनरुत्थान हुई देह में जीवन की बात थी, न कि किसी अस्पष्ट आत्मिक स्थिति में अस्तित्व की (देखें 1 कुरिन्थियों 15:42-58)।

शब्द "पृथ्वी का डेरा" यह संकेत नहीं हैं कि पतरस ने शरीर/आत्मा के द्वैत्वाद को स्वीकार कर लिया था। वह तो उस निश्चितता को स्वर दे रहा था कि उसके

जीवन का अन्त होने वाला है। जब तक वह समय आ नहीं जाता, वह इसे अपना दायित्व समझता था कि उन्हें **सुधि दिला दिलाकर** उभारता रहे। उसके पाठक मसीही कथा को जानते थे; वे मसीही अंगीकार के नैतिक आशश्य से अवगत थे। जब खतरा आया, तो प्रेरित ने परंपराओं की दोहाई दी। पतरस की आशा थी कि वह पुरानी कहानी उन्हें उभारेगी, उन्हें विश्वास और उत्साह में पुनःस्थापित करेगी। परंपरा कलीसिया के द्वारा बीते समय में वापस लौटना नहीं है। वह कलीसिया की लौ को तब फिर से प्रज्वलित करने वाली प्रेरणा है जब आलस, देह में परस्पर अनबन, या झूठी शिक्षाएं विश्वास के साथ समझौता करवाने लगते हैं।

पतरस की चेतावनियाँ पूरी पत्री के शास्त्रार्थ संबंधी होने के अनुसार थीं। पहले, उसने अपने पाठकों से आग्रह किया कि वे सर्वोच्च आचारण तथा नैतिक सिद्धांतों के अनुसार जीवन व्यतीत करें। उसने उन्हें उस शिक्षा के बारे में सुधि दिलाई जो उन्होने आरंभ में प्राप्त की थी। उसने अपने प्रेरित होने के अधिकार के संदर्भ में निवेदन किया। फिर, जब 2 अध्याय का आरंभ हुआ, तो उसने सीधे झूठे शिक्षकों पर ध्यान केंद्रित किया। लेकिन यहाँ भी उसका ध्यान शिक्षकों की ओर ही था।

आयत 14. पतरस अपनी मृत्यु का सही समय नहीं जानता था, परन्तु यूहन्ना 21:18, 19 में अपनी मृत्यु के बारे में प्रभु के साथ हुई चर्चा के बाद से वह मृत्यु को अपना संगी बनाए हुए जीता था। यीशु के शब्दों को अपने जीवन के किसी भी समय में स्मरण करना उसके लिए उपयुक्त था।

जो यह तर्क देते हैं कि 2 पतरस उपनाम के अन्तर्गत लिखा गया है, वे इस पद को पतरस द्वारा लिखे होने का एक महत्वहीन प्रयास समझते हैं। यह मान्यता स्वीकार करने के बाद, अगला कदम होता है कि वास्तविक लेखक इसे पतरस के जीवनकाल के अन्त की ओर के समय में, जब वह रोम में था, लिखे हुए होने का स्वरूप दे। केवल जब हम इस धारणा को मान लेते हैं कि पतरस ने यह पत्री नहीं लिखी है, तब ही हम लेखक से यह दर्शाने का प्रयास करवाते हैं कि यह रोमी प्रांत से लिखी गई। पत्री में ऐसा कुछ नहीं है जो इसके रोम से लिखे जाने का संकेत दे।

यूहन्ना 21 में हुई चर्चा में, यीशु ने संकेत दिया था कि पतरस बाँधा और बन्दी बनाया जाएगा। यदि लेखक कोई बाद का शिष्य होता जो अपने आप को पतरस दर्शाना चाहता था, तो हम अपेक्षा रख सकते हैं कि वह पतरस के बन्धुआ होने की भविष्यवाणी के बारे में कुछ कहेगा। वह उसी चर्चा का भाग है। इसके अतिरिक्त, यह उपयुक्त अवसर होता कि भविष्यवाणी के पूरा होने को दिखाने के लिए पतरस को रोमी पहरे में दिखाया जाए। परन्तु, 2 पतरस ऐसा कोई संकेत नहीं करता है कि लेखक बन्दीगृह में था। यदि इस पत्री का लेखक कोई बाद का शिष्य होता जो पतरस के नाम में लिख रहा था, तो उसने यूहन्ना 21 की चर्चा का अपने प्रेरित होने के दावे की पुष्टि के लिए अनमना सा ही प्रयोग किया है।

इसमें कम ही सन्देह है कि यूहन्ना 21 में यीशु के शब्द ही इस दावे की पृष्ठभूमि में हैं कि क्योंकि यह जानता हूँ कि **मेरे डेरे के गिराए जाने का समय**

शीघ्र आनेवाला है। जिस शब्द का अनुवाद शीघ्र आनेवाला है हुआ है उसके तात्पर्य पर बहुत वाद-विवाद है। यदि हम यह मान भी लें कि ταχινός *(ताखिनोस)* का सर्वोत्तम अनुवाद "शीघ्र" या "आनेवाला" है, तो प्रेरित रोम की यात्रा से बहुत पहले से मृत्यु की प्रत्याशा में जीता था। लेकिन इस बात का एक अच्छा तर्क बनाया जा सकता है कि "अचानक" इस शब्द का अधिक अच्छा अनुवाद होगा।[5] ऐसे में फिर शब्द के साथ समय का कोई महत्व नहीं होता है।

आयत 15. अपने पाठकों से यत्न करने का आग्रह करने के बाद (1:5, 10), प्रेरित ने अपने प्रयासों में यत्न का वचन दिया। अपने बारे में "हमारे प्रभु यीशु मसीह" की भविष्यवाणी का उल्लेख करने के पश्चात पतरस ने इच्छा जताई कि वह **इन बातों को** अपनी मृत्यु के बाद भी उन्हें उपलब्ध करवाएगा। स्पष्ट है कि **मेरे कूच करने** का तात्पर्य प्रेरित की मृत्यु से है।[6] "इन सब बातों" का संदर्भ पूर्णतः स्पष्ट नहीं है। यह उन बातों के लिए हो सकता है जिनकी चर्चा उसने इस पत्री में की है। हो सकता है कि आने वाले समय में पतरस अपने पाठकों के पास उन झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं का जो शिष्यों को भरमा रहे थे और विस्तृत खुलासा भेजना चाहता था। लेकिन बीती सदियों में, व्याख्या करने वालों ने उसके शब्दों को भिन्न समझा है।

प्रेरित ने अभी उन बातों के बारे में कहा जो "प्रभु यीशु मसीह" ने उसकी भावी मृत्यु के बारे में कही थीं। "इन सब बातों" का संदर्भ यीशु मसीह की बातें भी हो सकता है। हो सकता है कि पतरस ने यीशु की गाथा लिखने में यत्न करने का वचन दिया हो। क्या पतरस की इच्छा थी कि वह यीशु की सांसारिक सेवकाई के बारे में लिखे? बाइबल में कोई पतरस रचित सुसमाचार नहीं है, परन्तु यह मानने के कारण हैं कि पतरस सुसमाचार के विवरणों में से एक के प्रकाशन में कार्यकारी था।

कलीसिया के इतिहासकार यूसिबियस ने, चौथी शताब्दी के प्रथम अर्ध-भाग में, उसके समय तक जो कुछ कलीसिया में हुआ उसका अभिलेख बनाया। उसे अनेकों ऐसे लेख उपल्बध थे जो उन मसीहियों ने लिखे थे जो उससे पहले थे, ऐसे लेख जो अब लंबे समय से नष्ट हो चुके हैं। यूसिबियस को उपलब्ध अभिलेखों में से एक था पश्चिमी एशिया माइनर की एक कलीसिया के अगुवे पापियस का संस्मरण। यह मानने के कारण हैं कि पापियस का जन्म पतरस की मृत्यु के थोड़े ही समय के पश्चात हुआ। यूसिबियस के अनुसार, पापियस ने लिखा,

> मरकुस पतरस के लिए दुभाषिया बना और जो कुछ उसे स्मरण था उसे ठीक-ठीक लिखा, ऐसा नहीं कि प्रभु द्वारा कही या की गई बातों को उनके क्रम में ... । परन्तु उसने एक बात पर ध्यान दिया, कि जो कुछ उसने सुना था उसमें से कुछ ना छूटे और वह उनमें कोई झूठा वक्तव्य न डाले.[7]

ऐसी ही गवाही अन्य प्राचीन लेखकों से भी मिलती हैं। स्वयं यूसिबियस ने लिखा,

> [उन्होंने] मरकुस से निवेदन किया, जिसका सुसमाचार विद्यमान है, यह देखते हुए कि वह पतरस का अनुयायी है, कि वह उनके लिए उन्हें मौखिक दी गई शिक्षाओं का लिखित विवरण दे, और वे तब तक नहीं रुके जब तक उन्होंने उसे बाध्य नहीं कर दिया, और इस प्रकार वह पवित्रशास्त्र मरकुस रचित सुसमाचार का कारण हुआ।[8]

सबसे पुराने उपलब्ध ऐतिहसिक अभिलेखों के अनुसार, जो द्वितीय शताब्दी तक जाते हैं, पतरस ने अपने पाठकों को अपने "कूच करने" के बाद "इन बातों" को उपलब्ध करवाने के बारे में दिया गया वचन पूरा किया। मरकुस रचित सुसमाचार इस वचन की पूर्ति है।

"उसकी महिमा के प्रत्यक्षदर्शी" (1:16-18)

[16]क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य का और आगमन का समाचार दिया था, तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं था वरन हम ने आप ही उसके प्रताप को देखा था। [17]क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई और उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ। [18]तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी।

यहाँ अपनी पत्री में, पतरस अपने ऊपर लगाए गए किसी सीधे आरोप का प्रत्युत्तर देता प्रतीत होता है, या फिर आरोप उसके तथा उन अन्य लोगों के विरुद्ध थे जो पृथ्वी पर उनकी सेवकाई के समय में यीशु के साथ थे। ऐसा लगता है कि झूठे शिक्षकों ने पतरस पर अपने अधिकार को पुख्ता करने के लिए मनगढ़ंत कहानियाँ बनाने का आरोप लगाया था। पतरस ने इसका इन्कार किया। अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए, उसने अपनी गवाही को काफी सीमा तक दोहराया। यह ऐसी घटना थी जिससे प्रभु के ईश्वरत्व की ऐसी पुष्टि हुई जैसी और किसी से नहीं हुई।

आयत 16. प्रेरित ने इन्कार किया कि उसने और उसके साथ के अन्य प्रेरितों ने **चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों** का अनुकरण किया था। जब पतरस और अन्य ने श्रोताओं से यीशु की सेवकाई के समय की असामान्य घटनाओं के बारे में कहा, तो अनेक ने उन्हें "कहानियाँ" या "मिथक" (μῦθος, *मुथोस)* कहकर उनको खारिज कर दिया। बहुत से धर्म मिथकों पर आधारित हैं, देवताओं के मनुष्यों के साथ असामान्य रीति से घुलने-मिलने पर, जिससे कि दार्शनिक दृष्टिकोण को नैतिक आदर्शों के साथ संप्रेषित किया जाए। मिथक मानवीय दुविधाओं, आकांक्षाओं, भय, और आशाओं को व्यक्त करने के प्रभावी उपाय हैं। यूनानी धर्म मिथकों से भरा पड़ा था, जिनमें से अनेक सदियों पुरानी थीं। ऐसे प्राचीन लोग भी थे, और अब वर्तमान भी हैं, जो बाइबल की घटनाओं को – विशेषकर उन्हें जो आश्चर्यकर्मों की गवाही देती हैं – मूर्तिपूजक समाज में प्रचलित देवी, देवताओं

के मिथकों के साथ वर्गीकृत करना चाहते हैं। पतरस ने इन्कार किया कि जिन घटनाओं को उसने अनुभव किया था वे प्रचलित मिथकों के समान थे।

मसीही विश्वास सत्य पर अपना दावा वास्तव में हुई घटनाओं के आधार पर करता है। बाइबल के गवाहों की गवाही का ऐतिहासिक गवाही होने का इन्कार करना मसीही सन्देश के आधार की जड़ काटना है। पतरस ने घोषणा की, **हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य का और आगमन का समाचार दिया था।** प्रेरित ने "चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों" का अनुकरण नहीं किया था। मसीहियों के लिए, इतिहास को विश्वास से पृथक वर्ग में नहीं रखा जा सकता है। विश्वास और इतिहास परस्पर गुथे हुए हैं। यीशु की सामर्थ्य, उनकी सेवकाई के आरंभ से ही स्पष्ट थी। मनुष्यों के मध्य रहते हुए, उनके जिनकी उन्होंने सृष्टि की थी, यीशु ने आश्चर्यजनक रीति से ठीक ना हो सकने वाले बीमारों को चँगा किया था। जब उन्होंने हवा और लहरों को शान्त किया तो शिष्यों की प्रतिक्रिया अपेक्षित थी: "यह कौन है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं?" (मरकुस 4:41)। सदियों ने अनेकों शिक्षकों को, विभिन्न प्रकार के और परस्पर विरोधी सन्देशों के साथ देखा है। यीशु के अनुयायी जानते हैं कि उनके गुरु की तुलना अन्य किसी के साथ नहीं की जा सकती है। उन्होंने सत्य का आवरण ओढ़ा था। वे जानते हैं कि यीशु सत्य है, क्योंकि अन्य बातों के अतिरिक्त, वह "सामर्थ्य" के साथ आया था। वे जानते हैं कि वह "सामर्थ्य" के साथ आया था क्योंकि **उसके प्रताप को प्रत्यक्ष देखने वालों की गवाही** असीम विश्वासयोग्य है।

कुछ बहस करते हैं कि पतरस द्वारा "प्रभु के आगमन" के समाचार का उल्लेख यीशु के प्रथम आगमन से संबंधित है; जबकि अन्य मानते हैं कि वह उनके दूसरे से संबंधित है। परन्तु, झूठे शिक्षक, पतरस जिनका सामना कर रहा था, इस बात का इन्कार कर रहे थे कि यीशु दोबारा आने वाला है (3:3-10); उनके पहली बार सदेह आने के बारे में कोई प्रश्न नहीं थे। पतरस ने रूपांतर की जिस घटना का अनुभव किया था वह दोनों "सामर्थ्य और आगमन" की पुष्टि थी। मसीह के दूसरे आगमन का समय और स्वरूप 2 पतरस का विषय हैं, उसका प्रथम आगमन नहीं।

पतरस यह कहने से नहीं हिचकिचाया कि प्रभु द्वारा साधारण रीति से अपने आगमन के बारे में कही गई बात काफी थी। यदि उन्होंने लौट कर आने का वचन दिया है, तो मसीही आश्वस्त रह सकते हैं कि वो लौट कर आएंगे। उनके विरोधियों ने प्रभु के लौट कर आने के समय के बारे में अन्दाज़े लगाए होंगे, या उन्होंने यह घोषित कर दिया होगा कि वे किसी आत्मिक, गैर-वास्तविक रीति से आ चुके हैं। पतरस ने यीशु की सामर्थ्य को "पवित्र पहाड़" पर देखा था (1:18)। जो रूपांतर उसने वहाँ देखा था वह पर्याप्त गवाही था कि यीशु फिर से आएंगे। यह आना अभी भविष्य में होना था।

एक अन्य कारण है इस बात के बारे में निश्चित होने के लिए कि पतरस के मन में दूसरा आगमन था। यदि उसके शब्द यीशु के गलील और यहूदिया में प्रथम प्रगटिकरण से संबंधित हैं, नए नियम में यह एकमात्र स्थान है जहाँ παρουσία

(*पारौसिया*, "आगमन") को यीशु के मानवीय रूप में आने के लिए प्रयोग किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पतरस अपनी आँखें भविष्य की ओर लगा रहा था जब उसने "प्रभु के आगमन" की बात कही।

पतरस ने पीछे मुड़कर उस समय की ओर देखने के लिए जब परमेश्वर का पुत्र मनुष्यों में चलता-फिरता था "सामर्थ्य" शब्द प्रयोग किया। फिर उसने अपनी आँखें उस की ओर कीं जिसे अभी आना था। जैसे कि प्रेरितों ने यीशु की "सामर्थ्य" के बारे में बताया था, वैसे ही उन्होंने उसके "आगमन" के बारे में बताया था। यीशु भूतकाल में रहने वाले किसी मनुष्य के ऐतिहासिक स्मरण से बढ़कर है। वह जीवित प्रभु भी है जिसका पुनः "आगमन" होना है।

अपनी पहली पत्री में, प्रेरित ने प्रभु के "प्रकाशन" (ἀποκάλυψις, *अपोकालुपसिस;* 1 पतरस 1:7, 13; 4:13) के बारे में कहा, परन्तु दूसरी पत्री में उसने शब्द "आगमन" (παρουσία, *पारौसिया*; 2 पतरस 1:16; 3:4, 12) को अधिक पसन्द किया। "पारौसिया" को कभी-कभी सामान्य रीति से किसी के आने या उपस्थिति के लिए प्रयोग किया जाता था; परन्तु जैसे-जैसे शिष्य सुसमाचार का प्रसार करने लगे, यह युग के अन्त समय संसार का न्याय करने के लिए प्रभु के "आगमन" के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द बन गया। पतरस के समान, ही पौलुस ने भी दोनों शब्दों "प्रकटन" और "आगमन" को परस्पर अदल-बदल कर प्रयोग किया।

अन्यजाति मूर्तिपूजकों में सामान्यतः प्रचलित मिथकों का मनोरंजन करने तथा मनुष्यों के प्रसंगों के बारे में जो भी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक टिप्पणी वे कर सकते थे उसके अतिरिक्त और कोई उद्देश्य नहीं था। वे इतिहास में होने वाली सच्ची घटनाओं के बारे में नहीं थे। इसकी तुलना में पतरस का सन्देश, प्रभु के "सामर्थ्य और आगमन" के बारे में था। उसने एक ऐसे पुरुष के विषय गवाही दी जो समय काल में विद्यमान था, एक ऐसा मनुष्य जिसके शब्द और कार्य उसके "सामर्थ्य" का बयान करते थे। वही यीशु जो पलिस्तीन में रहता था, अन्त के समय न्याय के लिए आएगा, तब पृथ्वी और जो कुछ उस में है वह नष्ट हो जाएगा (3:10, 12)।

बजाय इसके कि "चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों" का अनुकरण करें, पतरस ने कहा कि वह और अन्य लोगों ने "आप ही उसके प्रताप को देखा था।" शब्द जिसका अनुवाद "देखने वाले" ἐποπτης *(एपोपटेस)* हुआ है, नए नियम में केवल यहीं प्रयुक्त हुआ है; परन्तु इसी प्रेरित ने इस शब्द के क्रिया रूप (ἐποπτεύω, *एपोपटेयो)* को दो बार (1 पतरस 2:12; 3:2) प्रयोग किया। यह नए नियम में और कहीं नहीं मिलता है।

पतरस ने अपने पाठकों के सामने कोई अफवाह प्रस्तुत नहीं की। झूठे शिक्षक प्रभु के बारे में कही जाने वाली बातों के लिए अपनी राय रख सकते थे, परन्तु पतरस वहाँ विद्यमान था। यह कोई संयोग नहीं है कि प्रेरित 1:15 में "मैं" से 1:16 में "हम" पर आ गया। वह प्रत्यक्षदर्शी था परन्तु केवल वह ही नहीं था। पतरस की गवाही की औरों ने भी पुष्टि की है। अपनी बात दृढ़ता से रखने के

पश्चात, प्रेरित ने अपना ध्यान एक घटना विशेष की ओर किया, एक अभूतपूर्व घटना, जिसका वह गवाह था।

आयत 17. सम्मिलित सुसमाचारों में, रूपांतर शिष्यों की यीशु के विषय समझ में परिवर्तन का बिन्दु था। तीनों ही वृत्तांतों में (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका. 9:28-36) यह घटना यीशु द्वारा शिष्यों से कैसरिया फिलिप्पी में हुए वार्तालाप से पहले आती है (मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-22)। यीशु ने उनसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?" भिन्न राय सामने आईं। फिर निर्णायक प्रश्न उठा, "तुम क्या सोचते हो कि मैं कौन हूँ?" शिष्य इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए अवश्य ही संघर्ष कर रहे होंगे। क्या यीशु भविष्यद्वक्ता था? क्या वह मसीहा था? इन दोनों प्रश्नों का उत्तर चाहे हाँ भी होता, तो भी उनके यह समझने के लिए कि वह परमेश्वर का पुत्र, ईश्वर, था, अभी मार्ग लंबा था।

इसके बाद यीशु, पतरस, याकूब, और यूहन्ना, तीनों के साथ पहाड़ पर गया। वहाँ उन्होंने उसका रूपान्तरण होते हुए देखा। वहाँ उन्होंने मूसा और एल्लियाह को उसके साथ देखा। सबसे बढ़कर, उन्होंने वहाँ पर उसके विषय में परमेश्वर से गवाही सुनी। यह घटना कोई किंवदन्ती नहीं थी। पतरस ने इसका हवाला दिया क्योंकि, उसने जो भी बातें अनुभव की थीं, उनमें से परमेश्वर की यह गवाही सबसे अधिक विवश कर देने वाली थी। उस समय पहाड़ पर भी, न तो उसे और न ही अन्य शिष्यों को जो उन्होंने देखा था उसका महत्व समझ में आया था। अब, उस घटना के अनेकों वर्ष के बाद, वह उसे और अधिक भली प्रकार से समझ सका था।

पतरस ने कहा पहाड़ पर यीशु ने **परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई**। परमेश्वर ने पहाड़ पर यीशु का अपना पुत्र होने का दावा किया था। उसने उनका आदर किया था। इसके अतिरिक्त, यीशु का रूपांतर शिष्यों की उपस्थिति में हुआ था। "उसके चेहरे का रूप बदल गया: और उसका वस्त्र श्वेत हो कर चमकने लगा" (लूका 9:29)। उन्होंने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पहले कभी नहीं देखी थी। लूका ने लिखा "जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उस की महिमा" को देखा (लूका 9:32)। बाइबल में बहुधा ज्योति और चमक परमेश्वर की उपस्थिति के साथ पाए जाते हैं। मूसा ने परमेश्वर की उपस्थिति को जलती हुई झाड़ी में देखा (निर्गमन 3:3-6)। एक स्वर्गदूत कुरनेलियुस के सामने चमकदार वस्त्रों में आया (प्रेरितों 10:30)। यशायाह ने लिखा, "जाति जाति तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे।" (यशायाह 60:3)। वह उसकी महिमा की चमक थी जिसे पतरस और उसके साथियों ने पहाड़ पर देखा।

प्रेरित ने आगे परमेश्वर को **प्रतापमय महिमा** के रूप में पहचाना। यह रोचक बात है कि किसी भी सुसमाचार में यह स्पष्ट लिखा नहीं गया है कि परमेश्वर ने पहाड़ पर बात की। तीनों ही वृतांत यह कहते हैं कि बादल में से एक आवाज़ आई। अवश्य ही, जो आवाज़ यीशु को अपना पुत्र होने का दावा कर रही थी वह केवल परमेश्वर ही की हो सकती है। अनेकों वर्षों के बाद लिखने पर भी, पतरस

को अपने तथा औरों पर परमेश्वर की महिमा के प्रभाव का स्मरण था। "परमेश्वर पिता" "प्रतापमय महिमा" ने उन्हें कायल कर दिया था कि उनका मित्र और गुरु और कोई नहीं परमेश्वर का पुत्र ही था।

पहाड़ पर "प्रतापमय महिमा" ने घोषणा की **यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ।** शब्द मत्ती के लेख के समान तो हैं, परन्तु वे बिल्कुल वही नहीं हैं जैसे किसी भी सुसमाचार वृतांत में पाए जाते हैं।[9] परन्तु जो पुष्टि वे करते हैं उसमें कोई भिन्नता नहीं है। सुसमाचार के तीनो सहदर्शी वृत्तांत एक अनिवार्यता को भी जोड़ देते हैं "इस की सुनो!" पतरस ने इसे क्यों नहीं लिखा यह अनिश्चित है। संभव है कि प्रेरित का उद्देश्य पहाड़ पर परमेश्वर द्वारा दी गई ऐतिहासिक गवाही की पुष्टि करना था। मुद्दा यीशु का परमेश्वर का पुत्र होना था, न कि उसका अधिकार।

आयत 18. इन आरोपों के प्रत्युत्तर में कि उसने "चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों" का अनुकरण किया था, पतरस ने तीन विचार प्रस्तुत किए: (1) वह पहाड़ पर अकेला नहीं था। सारे परिच्छेद में उसने सर्वनाम "हम" प्रयोग किया है। वह, याकूब और यूहन्ना वहाँ पर थे। तीनों की गवाही एकमत थी। (2) झूठे शिक्षकों के असमान जो बतंगड़ बनाते और अन्दाज़ा लगाते थे, पतरस वहाँ पर प्रभु के साथ था। (3) उसने न केवल देखा वरन आकाश से आई आवाज़ को भी सुना था।

यह रोचक है कि पतरस ने कहा कि घटना **पवित्र पर्वत पर** घटित हुई। पहाड़ किस रीति से "पवित्र" था? कोई वस्तु तब पवित्र होती है जब वह किसी रीति से परमेश्वर के लिए पृथक की जाती है। पवित्र क्या है का वर्णन करने की एक अन्य विधि है कि परमेश्वर और उससे विशेषत्या जुड़ी हुई वस्तुएं पवित्र हैं। क्या यह पहाड़ रूपान्तरण की घटना से पूर्व पवित्र था, या वह उस समय पवित्र हुआ? हम बाइबल में पाते हैं कि यह अनहोना नहीं है कि किसी भवन या भूगौलिक अस्तित्व के साथ विशेषण "पवित्र" जोड़ दिया जाए। सामान्यतः मन्दिर के पहाड़ को "पवित्र पर्वत" कहते थे, और उस पर स्थित भवन को "पवित्र मंदिर" कहा जाता था। जो देश परमेश्वर ने इस्राएल को विरासत में दिया था वह "पवित्र देश" था (ज़कर्याह 2:12)।

कोई भी सुसमाचार इतना वर्णन नहीं देता है कि निश्चित होकर कहा जाए कि इस्राएल के किस पहाड़ पर रूपान्तरण हुआ था। कुछ लोग हरमोन पहाड़ की भिन्न चोटियों के विषय तर्क देते हैं; अन्य तबोर पहाड़ के लिए कहते हैं। पहाड़ चाहे कोई भी रहा हो, यह अनहोना है कि पतरस के कहने का तात्पर्य था कि जिस पहाड़ पर रूपान्तरण हुआ वह वहाँ पर घटित हुई उस घटना के कारण किसी प्रकार से सदा के लिए पवित्र हो गया था। वह घटना पवित्र थी, न कि वह स्थान जहाँ पर वह हुई।

पवित्र-शास्त्र का अधिकार और प्रेरणा (1:19-21)

[19]हमारे पास जो भविष्य-द्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। [20]पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचार-धारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, [21]क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

पतरस के विचार एक घटना विशेष से, जो यीशु के ईश्वरत्व की गवाही के लिए विशिष्ट थी, हट कर पवित्र-शास्त्र के स्वरूप पर हुई टिप्पणियों पर गए। इस प्रक्रिया में उसने बाइबल द्वारा अपने सन्देश के विषय दिया गया सबसे स्पष्ट कथन कहा। मसीही मानते हैं कि सभी पुस्तकों में से केवल बाइबल ही एकमात्र है जो परमेश्वर का सन्देश है। वे उसके पृष्ठों में परमेश्वर के अधिकार और उपस्थिति की पुष्टि करते हैं, जो उसके धर्म और नैतिकता के बारे में मार्गदर्शन देने के लिए काफी है। अविश्वासी जन मसीहियों से इस निश्चितता के कारणों की माँग करेंगे। अधिकांश अविश्वासियों के लिए यह तर्क कि क्योंकि बाइबल अपने आप को परमेश्वर की ओर से कहती है इसलिए वह है, काफी नहीं होगा। फिर भी, बाइबल जो अपने विषय में कहती है वह बात को आरंभ करने के लिए अति-महत्वपूर्ण है।

आयत 19. अंग्रेज़ी अनुवाद इस आयत की यूनानी को समझने की दो विधियाँ बताता हैं: (1) अर्थ यह हो सकता है कि पतरस के पाठक **भविष्य-द्वक्ताओं के वचन** को और अधिक निश्चित मान सकते हैं क्योंकि जो गवाही परमेश्वर ने पहाड़ पर अपने पुत्र के विषय दी उससे वह **और भी अधिक दृढ़ ठहरा।** NASB इसे ही पतरस का तात्पर्य मानती है। (2) वैकल्पिक रीति से, हो सकता है कि प्रेरित कहना चाह रहा हो कि "भविष्यद्वक्ताओं का वचन" – जिसे पतरस के कुछ पाठक मसीह के विषय पतरस के विवरण से और भी अधिक दृढ़ गवाही मानते – बताता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है। इसे KJV अनुवाद करती है, "हमारे पास भविष्यवाणी का और भी अधिक निश्चित वचन है।"[10] यदि यही पतरस का अभिप्राय है, "भविष्यवाणी का और भी अधिक दृढ़ वचन" माँगता है कि पाठक प्रेरित की गवाही पर और भी अधिक भरोसा रखें।

इनमें से कोई भी व्याख्या संभव है। परन्तु क्योंकि प्रेरित झूठे शिक्षकों से आक्रमण झेल रहा था, जिन्होंने उस पर "चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों" (1:16) को बनाने का आरोप लगाया, पतरस संभवतः इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि उसके द्वारा अपने पाठकों को दी गई गवाही का पवित्र-शास्त्र समर्थन करता है। संभवतः KJV सही है, यद्यपि अधिकतर अनुवाद और कमेन्ट्रियाँ NASB से

सहमत हैं। जो पतरस द्वारा कही गई पहाड़ पर परमेश्वर की मसीह के प्रति दी गई गवाही पर विश्वास नहीं करना चाहते हैं, उनके लिए अधिक दृढ़ "भविष्तद्वाक्ताओं का वचन" स्पष्ट कर देता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था।

वाक्यांश को कोई कैसे भी समझे, मसीहियों के लिए "भविष्यद्वाक्ताओं के वचन" पर **ध्यान देने** के पर्याप्त कारण हैं। "भविष्यद्वक्ताओं के वचन" से पतरस का तात्पर्य संपूर्ण पुराने नियम से था, न कि केवल भविष्यवाणी से संबंधित साहित्य से। जब से यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले ने प्रचार करना आरंभ किया था, तब से यीशु का जीवन और मृत्यु, शिक्षाएं और कार्य, पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति समझे जाते थे। यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा था; प्रतिज्ञा किए हुए परमेश्वर के राज्य का उद्घाटन उन्होंने ही किया था। यीशु के जीवन और सेवकाई के लगभग प्रत्येक पहलू के लिए मत्ती रचित सुसमाचार का पुराने नियम के प्रति निवेदन, भली-भांति जाना हुआ है। जब पुनरुत्थान के पश्चात यीशु शिष्यों के सामने प्रकट हुए, तो उन्होंने उन्हें आश्वस्त किया कि, "जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों" (लूका 24:44)। प्रेरितों के काम के आरंभिक भाग में पतरस के प्रचार में पुराने नियम की बातें भरी हुई हैं। 1 पतरस में, प्रेरित ने "भविष्यद्वक्ताओं के वचन" के प्रति बारंबार निवेदन किया (1:24, 25; 2:4-10, 22-25; 3:10-12, 20-22; 4:18; 5:5)।

जो झूठे शिक्षक सुसमाचार के आधार को काटने का प्रयास कर रहे थे, और जो लोग उन की सुनना चाहते थे, पतरस ने उन्हें चेतावनी दी, "भविष्यद्वक्ताओं के वचन" के प्रति "ध्यान देकर तुम अच्छा करते हो।" प्रेरित झूठे शिक्षकों पर किए जाने वाले भरपूर प्रहार की तैयारी कर रहा था। थ्योरी के हिसाब से, किसी व्यक्ति द्वारा कही गई बात की सत्यता का आंकलन उसमें निहित मूल्य के आधार पर किया जा सकता है। परन्तु, सामान्यतः, यह ऐसे कार्य नहीं करता है। पहले हम व्यक्ति का आंकलन करते हैं, और फिर जो वह कह रहा है उसका आंकलन उस दृष्टिकोण में होकर करते हैं जिसे हमने उस पुरुष के विषय अपना आंकलन करते हुए, उसके लिए बनाया है। प्रेरित पतरस यह समझ रहा था कि जिस मसीही समाज को वह संबोधित कर रहा है यदि उस पर कोई प्रभाव लाना है, तो उसे पहले अपनी विश्वासयोग्यता स्थापित करनी होगी। उसने ऐसा रूपांतर के समय उसके द्वारा अनुभव की गई घटनाओं को स्मरण करके किया। साथ ही, उसने दावा किया स्वयं परमेश्वर की गवाही भी उसके द्वारा कही गई बात को स्थापित करती है।

वे लोग भी जो पतरस की गवाही को चतुराई से गढ़ी हुई कहानी समझकर बर्खास्त कर देते हैं, पुराने नियम की भविष्यवाणियों के प्रति "ध्यान देकर अच्छा करेंगे।" पवित्र-शास्त्र **अन्धियारे स्थान में चमकता हुआ दीया है**। जिस शब्द का अनुवाद अन्धियारे स्थान (αὐχμηρός, *औखमेरोस)* हुआ है, वह नए नियम के उन अनेकों शब्दों में से एक है जो केवल यहीं पाए जाते हैं। यह एक बहुरूपी शब्द है। "दीया" किसी बिल्कुल अन्धियारे स्थान में नहीं चमक रहा है, वरन एक

धुंधले, गन्दे, कालिख वाले कोहरे से ढके स्थान पर। "अन्धियारा स्थान" संसार है जिसमें पतरस और उसके पाठक रहते थे। यह वह संसार है जिसमें विश्वासी अभी भी जी रहे हैं। बाइबल का सबसे लंबा अध्याय, भजन 119, व्यवस्था की महिमा का बखान करने को समर्पित है। पतरस के समान, भजनकार के लिए परमेश्वर का वचन मार्ग को उजियाला कर देने वाला दीपक है। "तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है" (भजन 119:105)।

2 पतरस की अलंकृत तथा सुसज्जित भाषा और प्रकट होती है, जैसे-जैसे पतरस ने उस समय की प्रत्याशा की, जब यह अन्धकारमय संसार कठिनाइयों के साथ, पवित्र-शास्त्र से उजियाला होता रहेगा, जब तक कि **पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे**। चित्रण एक लंबी रात्रि की पहरेदारी का है जो भोर होने के चिन्हों के द्वारा समाप्त होती है। संभवतः पतरस के विचार भजनकार के विचारों द्वारा प्रेरणा प्राप्त किए हुए थे: "मैं यहोवा की बाट जोहता हूं, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूं, और मेरी आशा उसके वचन पर है; पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, हां, पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, उस से भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हूं" (भजन 130:5, 6)।

एक सामान्य सहमति है कि गिनती 24:17, "याकूब में से एक तारा उदय होगा" ने ही वाक्यांश "भोर का तारा चमक उठे" के लिए प्रेरणा दी है। दोनों, यहूदी और मसीहियों ने गिनती 24:17 को मसीही भविष्यवाणी माना था। प्रभु के लौट कर आने के खण्ड में, यह अनेपक्षित है कि पतरस यह जोड़े कि यह भोर का तारा "तुम्हारे हृदयों में" चमक उठे। संभवतः उसका तात्पर्य केवल इतना था कि विश्वासियों के हृदय प्रफुल्लित हो जाएंगे जब आशाएं और सपने नए युग के आगमन से पूरे होंगे। बाद में इस पत्री में, प्रेरित ने उन्हीं घटनाओं के साथ युग के अन्त और न्याय के संदर्भ में फिर से निपटारा किया। उसने कहा, "परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा" (3:10)। विश्वासियों के लिए वह दिन आनन्द और ज्योति का होगा। भोर का तात्पर्य है एक नया जीवन, दुःख और पाप से मुक्त।

आयत 20. यह ध्यान में रखते हुए कि विश्वासी "भविष्यद्वक्ताओं के वचन" के प्रति "ध्यान करके अच्छा करते हैं" प्रेरित ने समझाना ज़ारी रखा कि क्यों वचन में अधिकार है। विश्वासियों के लिए **पहले** यह जान लेना महत्वपूर्ण है कि **कोई भी भविष्यद्वाणी किसी की अपनी ही विचार-धारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती।** इस आयत का अर्थ उस संज्ञा पर आधारित है जिसका अनुवाद "विचार-धारा" (ἐπίλυσις, *एपिलुसिस)* हुआ है। यह नए नियम में इस रूप में केवल यहीं आता है। मरकुस 4:34 में इसका मिलता-जुलता शब्द है "व्याख्या" या "समझाना"; इसलिए "विचार-धारा" संज्ञा का अच्छा अनुवाद है। फिर भी यह खण्ड अस्पष्ट है। वार्तालाप में सामान्यतः "समझाना" दूसरा कदम होता है। कोई वक्ता या लेखक वक्तव्य देता है; श्रोता या पाठक उसे समझता है। जब पवित-शास्त्र को लिखा जा रहा है तब "समझाना" संदर्भ में कहाँ पर आता है? इस खण्ड को समझने की दो संभव विधियाँ हैं।

पहली, पतरस का अर्थ हो सकता है कि जब भविष्यद्वकताओं ने पवित्र-शास्त्र के वचन लिखे, तो उन्हें अपनी ही समझ पर नहीं छोड़ा गया था, कि वे किसी स्वप्न या उत्तेजना की व्यक्तिपरक स्थिति को संभवतः परमेश्वर का सन्देश समझ लें। पवित्र-शास्त्र में भविष्यवाणी किसी व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत घटनाओं की व्याख्या करने से कहीं बढ़कर है। इसमें परमेश्वर सीधे-सीधे सम्मिलित होता है। वही सुनिश्चित करता है कि जो शब्द भविष्यद्वक्ता पवित्र-शास्त्र में लिख रहा है वे सत्य हैं। यह विचार पौलुस के पुष्टिकरण के समान हैं कि, "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" (2 तीमुथियुस 3:16)। जो दूसरी संभावना है वह यह है कि पतरस के विचार में पवित्र-शास्त्र के काल्पनिक अर्थ थे जो झूठे शिक्षकों द्वारा दिए जा रहे थे। संभव है कि वह कह रहा था कि पवित्र-शास्त्र की व्याख्या करना कलीसिया का सामूहिक कार्य है। पवित्र-शास्त्र की व्यक्तिगत व्याख्या आधिकारिक नहीं होती है। जब भी व्यक्तिगत व्याख्या सामूहिक व्याख्या से भिन्न हो, तो व्यक्तिगत व्याख्या गलत है। पवित्र-शास्त्र व्यक्तिगत व्याख्या के लिए नहीं है।[11]

निःसन्देह पहली व्याख्या ही सही है। वही "भविष्यद्वक्ताओं का वचन" आयत 19 और 20 का भी विषय है। प्रेरित ने विश्वासियों से कहा कि वे पवित्र-शास्त्र पर ध्यान दें, और फिर उसने उन्हें बताया कि क्यों। पवित्र-शास्त्र परमेश्वर का वचन है, भविष्यद्वक्ताओं की कल्पनाओं का नहीं। जिस "व्याख्या" पर विचार किया जा रहा है वह भविष्यद्वक्ता के लिखने के समय की है, न कि पाठक के द्वारा उसका अर्थ पूछने की।

इसमें कोई अचरज की बात नहीं है कि दूसरी व्याख्या को उन कलीसियाओं से महत्व मिला है जहाँ एक प्रबल क्रमवार ओहदे के साथ कार्य करने वाला संघीय पुरोहित वर्ग है। उनका तर्क है कि कलीसिया ने संसार को बाइबल प्रदान की और केवल कलीसिया ही उसकी व्याख्या करने के लिए सक्षम है। व्याख्या करना किसी भी व्यक्ति के लिए बहुत विषम है। इस खण्ड की व्याख्या को इस प्रकार समझने में KJV भी योगदान करती है जब वह इसका अनुवाद करती है कि, "पवित्र-शास्त्र की कोई भी भविष्य्वाणी किसी की व्यक्तिगत व्याख्या के लिए नहीं है।" यद्यपि यह अनुवाद सर्वोत्तम तो नहीं है, फिर भी इससे एक महत्वपूर्ण बिन्दु लिया जा सकता है। बाइबल का अर्थ पाने के लिए सामूहिक रीति से की गई व्याख्या को किसी की व्यक्तिगत से अधिक वरियता दी जानी चाहिए।

क्योंकि प्रत्येक मसीही याजक भी है (1 पतरस 2:5; प्रकाशितवाक्य 1:6), इसलिए प्रत्येक को पवित्र-शास्त्र के सन्देश को पढ़ने, व्याख्या करने, और उसे पढ़ाने का उत्तरदायित्व लेना चाहिए। परन्तु जब कोई व्यक्ति पवित्र-शास्त्र की ऐसी व्याख्या करता है जो कलीसिया के मूलभूत सिद्धांतों का तिरस्कार करती है, तो उसे आत्मिक रीति से परिपक्व विश्वासियों की आवाज़ को भी सुन लेना चाहिए। उसे दूसरों से मिले निर्देशों के अनुसार अपनी व्याख्या का पुनःआवलोकन कर लेना चाहिए।

आयत 21. इस संयोग से कि फिर भी गलत समझने की संभावना है, प्रेरित

ने फिर से स्पष्टिकरण दिया। वह चाहता था कि उसके पाठक जान लें कि भविष्यवाणी क्या नहीं है; फिर वह चाहता था कि वे जानें कि वह क्या है। **क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।** यहाँ पर आकर, पवित्र-शास्त्र की व्याख्या नहीं, वरन उसका उद्गम पतरस की चिंता का विषय था। पतरस के इस पुष्टिकरण के तात्पर्य दूरगामी हैं। चाहे हमारे पास यहाँ उन पर विस्तार से विचार करने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है, परन्तु एक या दो बिन्दुओं पर विचार करना उचित है। पहला, "भविष्यवाणी" जिस पर विचार कर रहे हैं से तात्पर्य, जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, संपूर्ण पुराना नियम है। यदि हम नए नियम को भी इसी निर्देश के आधीन लाते हैं तो कुछ बाह्यगणन करने की आवश्यकता पड़ेगी। फिर भी, ऐसे बाह्यगणन करना सीमा से बाहर नहीं है। पौलुस और नए नियम में योगदान देने वाले अन्य लोगों को भी आभास था कि पवित्रात्मा उनका मार्गदर्शन कर रहा है (1 कुरिन्थियों 2:13; 1 थिस्सलुनीकियों 1:5)।

दूसरे, क्योंकि बाइबल "परमेश्वर की ओर से बोलने" वालों और "पवित्रात्मा द्वारा उभारे जाने वालों" का परिणाम है, इसलिए यह मानना उचित है कि पवित्र-शास्त्र विश्वासयोग्य है। जबकि बाइबल के लेखकों ने अपने सन्देश कहने के लिए भाषा की सामान्य प्रथाओं का प्रयोग किया, पवित्र-शास्त्र में ऐतिहासिक तथ्यों के प्रस्तुतिकरण, धार्मिक निर्देशों, या नैतिक अनिवार्यताओं में त्रुटि नहीं है। इतना कहने पर भी इस बारे में बहुत कुछ निर्धारित करना शेष है कि शब्द "त्रुटि" से क्या अर्थ है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि पवित्रात्मा ने बाइबल की प्रतियाँ बनाने और उनके प्रसारण को त्रुटियों से बचाने में कोई बचाव किया हो। प्रमाण इसके विपरीत हैं। हमें इस संभावना को, और कभी-कभी वास्तविकता को अनुमति देनी चाहिए कि प्रसारण की प्रक्रिया में त्रुटियाँ हुई हैं।

इसके अतिरिक्त, अनुवाद करना कोई अचूक प्रक्रिया नहीं है। यदि होती तो हमें अनेकों अनुवादों की आवश्यकता नहीं पड़ती। प्रेरणा प्राप्त एक ही अनुवाद पर्याप्त होता। अनुवादकों से कहा जाता है कि वे अपनी सर्वोत्तम समझ के अनुसार मूल भाषा से अनुवाद और व्याख्या करें। हमें अनुवाद में त्रुटियाँ होने की भी अनुमति देनी चाहिए। यद्यपि यह विचलित करने वाला हो सकता है, विशेषतः जब पहली बार इसका सामना किया जाए, हम इस बात से सांत्वना पा सकते हैं कि बाइबल के हज़ारों लेख सुरक्षित उपलब्ध हैं। हम उन ज्ञानियों के ऋणी हैं जिन्होंने सारा जीवन लेखों में भिन्नता वाले भागों की जाँच और आँकलन में लगा दिया। जब कि अनुवाद वैसे प्रेरणा पाए हुए नहीं हैं जैसे मूल लेख प्रेरणा पाए हुए थे, हम आश्वस्त रह सकते हैं कि बाइबल का अंग्रेज़ी में अनुवाद बहुत बारीकी से जाँच कर किया गया है। हमें सचेत तो रहना चाहिए, परन्तु हम भरोसा रख सकते हैं कि हमारे पास उस सन्देश तक पहुँच है जिसके द्वारा परमेश्वर लोगों को अपना नाम धारण करने के लिए बुलाता है और जीवन के मार्ग पर उन्हें निर्देशित करता है।

अनुप्रयोग

परमेश्वर का प्रेम (1:3)

संभवतः मसीही सिद्धांतों में से सबसे आधारभूत है यह साधारण सा दावा कि "परमेश्वर प्रेम है।" यह वह अंगीकार है जिसे समय-समय पर गहराई से परखा गया है।

कल्पना कीजिए एक जवान स्त्री के बारे में जिसने नौ महीने की गर्भावस्था सहन की है और उत्सुकता से अपने पहले बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा कर रही है। फिर बच्चे का आगमन होता है, और उसे यह समाचार दिया जाता है। बच्चे को डाउन सिन्ड्रोम नामक जन्मजात दोष है। वह जवान स्त्री आपकी ओर देखकर आपसे पूछती है, "क्या परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है? क्या वह इस बच्चे से प्रेम करता है? आप कैसे कह सकते हैं कि परमेश्वर प्रेम है जब वह यह होने देता है?" यह अंगीकार कि परमेश्वर प्रेम है हल्के में नहीं किया जा सकता है। बहुत दुःख हैं। प्रत्यक्षतः, निर्दोष लोग किसी अपराध के दोषी न होने पर भी दुःख उठाते हैं। यदि परमेश्वर अपने लोगों से प्रेम रखता है, और यदि वह सर्वसामर्थी है, तो वह निर्दोषों को क्यों दुःख उठाने देता है?

पतरस का उत्तर इस बात की पुष्टि करना है कि "सब कुछ जो जीवन और भक्ति से संबन्ध रखता है" वह हमें दे दिया गया है (1:3)। इसका तात्पर्य है कि परमेश्वर संसार के पाप और बुराई में होकर भी अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है और कर रहा है। मसीही जब नासरत के यीशु के पक्ष में चुनाव करते हैं, तो वे जीवन और भक्ति की ओर खड़े हो जाते हैं। संसार पर राज्य करना परमेश्वर का कार्य है। उस पर विश्वास रखना और उससे प्रेम रखना यह सृष्टि का कार्य है। हम मानते हैं कि हम उसके सभी मार्गों को नहीं जानते हैं। परन्तु हम इतना तो जानते हैं कि हम अपने आप को उसकी देखभाल में समर्पित कर दें। यीशु मसीह में होकर, हम उसके बारे में इतना जानते हैं कि पाप से बचाए जाएं और अनन्त जीवन की आशा रखें।

उसके लिए वचन होना (1:5-8)

पतरस द्वारा दिए गए मसीही सदगुणों में से गलातियों 5:22, 23 में दिए गए आत्मा के फलों के साथ अनेक संपर्क बिन्दु हैं। दोनों ही लेखक, पतरस और पौलुस उन गुणों को समझते थे जिनकी सूची उन्होंने "फल" के प्रकार होने की बनाई थी। पतरस ने कहा कि जिन सदगुणों की सूची उसने बनाई थी वह मसीहियों को "निष्फल" नहीं होने देंगी। शब्द हमें ऐसा शब्दकोष देते हैं जिससे हम मसीहियों द्वारा जीवन व्यतीत करने के बारे में विचार कर सकें। जिन विचारों को हम नाम नहीं दे सकते हैं उनके बारे में सोचने में हमें समस्या होती है।

अनुभव हमारे शब्दकोषों को स्वरूप देते हैं और हमारे विचारों को ढालते हैं। उदाहरणस्वरूप, एक एस्कीमो के पास बर्फ के लिए अनेक शब्द हैं। उष्णकटिबन्ध

में रहने वाले व्यक्ति के पास कोई भी नहीं है। क्योंकि उसके पास भिन्न नाम हैं इसलिए एस्कीमो बर्फ में वो भिन्नताएं देखेगा जो उष्णकटिबन्धी को बर्फ के कणों में दिखाई नहीं देंगी।

इसी प्रकार, परमेश्वर के साथ अनुभव हमें वे संज्ञाएं और शब्द देते हैं जिनसे हम समझ सकते हैं कि वह कौन है और अपने लोगों को किस प्रकार का जीवन जीते हुए देखना चाहता है। नैतिक संवेदनाएं बढ़ती हैं जब उन बारीकियों पर ध्यान किया जाता है जिन से एक ओर "संयम" और दूसरी ओर "भक्ति" के मध्य की भिन्नता को समझा जाता है। "भईचारे की प्रीति" वही नहीं है जिसे सामन्यतः प्रयुक्त शब्द "प्रेम" द्वारा प्रकट किया जाता है। जिन सदगुणों को उसके लोगों ने अपनाना है, उन्हें संज्ञा देने के द्वारा, परमेश्वर ने हमें उन्हें पहचानने का, उनके बारे में सोच-विचार करने का, और जीवन के लिए आदर्श मानकर उनका अनुकरण करने का माध्यम दिया है।

अपनी बुलाहट और चुने जानें को सुनिश्चित करें (1:8-11)

जब एक मसीही उदारता से अपने जीवन को उन सदगुणों से सुसज्जित कर लेता है जिनकी सूची पतरस ने दी है, जब वह उनका अभ्यास करता है, तो मसीह का ज्ञान इसका स्वाभाविक परिणाम होता है। जो कोई भी इन मसीही सदगुणों को अपने जीवन में जोड़ता है वह ज्ञान में निकम्मा और निष्फल नहीं रह सकता है। पतरस व्यावाहरिक ज्ञान की बात कर रहा था, सैद्धांतिक की नहीं। दोनों एक ही नहीं हैं। उदाहरण के लिए कोई जिम्नैस्टिक्स के बारे में पढ़ सकता है, परन्तु जिम्नैस्टिक्स को वह तब ही जान पाएगा जब वह अपने जीवन के कई वर्ष उसके अभ्यास में व्यय करेगा। जिन झूठे शिक्षकों का पतरस ने सामना किया वे उन बातों को जानने का दावा करते थे जिन्हें स्वयं प्रेरित भी नहीं जानते थे। उनके लिए ज्ञान साझा किए जाने के लिए एक गोपनीय, गुप्त बात थी। पतरस के लिए ज्ञान और भक्ति में कोई भिन्नता नहीं थी।

ज्ञान सैद्धांतिक नहीं होता है। यह जीवन में कार्यकारी होने से ही सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए कोई धीरज के बारे में पढ़ सकता है, परन्तु धीरज रखना क्या है और स्वयं उसकी धीरज रखने की क्या क्षमता है, वह तब ही जान पाएगा जब वह धीरज बनाए रखेगा। इसी प्रकार वह संयम को तब ही जान पाएगा जब वह संयम का अभ्यास करेगा। धीरज, संयम और अन्य मसीही सदगुणों को जानना मसीह को जानने से भिन्न नहीं है। करने से ही जानना होता है। प्रेरित ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया, "क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।" इसके विपरीत, जो मसीह को जानने का दावा करता है और मसीही शिक्षाओं के इस व्यावाहरिक प्रगटिकरण को नहीं जानता है वह अन्धा है और भूल बैठा है (अर्थात, जानता नहीं है) कि वह पिछले पापों से धोया गया है।

सत्य में स्थापित (1:12-18)

"सत्य" पूरी रीति से समझने के लिए कठिन शब्द है। यह बाइबल में एक महत्वपूर्ण शब्द है। यीशु ने कहा, "और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:32)। यीशु के मुकदमे के समय, पिलातुस ने पूछा, "सत्य क्या है?" (यूहन्ना 18:38)। पिलातुस के समान नहीं, बाइबल का इस धारणा के साथ आरंभ और अन्त होता है कि लोग सत्य को जान सकते हैं।

हम में से अधिकांश ऐसे लोगों को जानते हैं जो इस बात को लेकर निश्चित लगते हैं कि, लोग चाहे जिस बारे में बात करें, वे उस विषय के सत्य के बारे में सब जानते हैं। सुबह के नाश्ते के लिए सबसे उपयुक्त भोजन वस्तु कौन सी है से लेकर, भारत में मौसम की जानकारी, प्रत्येक नैतिक विषय, उन्हें सब के बारे में पता है। साथ ही मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जो किसी भी उत्तर के बारे में निश्चित नहीं हैं। हमारे संसार के लोग, मोटे तौर पर, हमारे वृद्धों की पीढ़ी की अपेक्षा, इस बात को लेकर बहुत कम निश्चित हैं कि वे सब कुछ के सत्य के बारे में जान सकते हैं।

प्रेरित पतरस ने मसीहीयों को, जिन्हें वह 2 पतरस में संबोधित कर रहा था,आश्वस्त किया कि वे सत्य को जान सकते हैं। उसके शब्दों के महत्वपूर्ण तात्पर्य हैं।

1. *जो सत्य की निष्ठा के साथ खोज करते हैं वे उसे पा सकते हैं।* हमें आवश्यक सत्य को जानने के लिए समस्त सत्य को जानना आवश्यक नहीं है। प्रेरित ने लिखा, "इसलिये यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है उसमें बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूँगा" (2 पतरस 1:12)।

पतरस और अन्यों ने संसार को वह बताया जो उन्होंने देखा और सुना था जब वे यीशु के साथ थे। उन्होंने उन्हें अन्धे को छूकर चँगा करते हुए देखा था। वे वहाँ थे जब उन्होंने आँधी-तूफान को आश्चर्यजनक रीति से शान्त किया और पाँच हज़ार को भोजन कराया। वे उन के साथ रूपान्तरण के पहाड़ पर थे जब परमेश्वर की ओर से आवाज़ आई और गवाही दी गई कि यीशु ही प्रभु है। पतरस उस बात का गवाह था कि जब उसने कहा "... 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ।' तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी ..." (2 पतरस 1:17ब, 18)।

उन में से कुछ ने जिन्होंने पतरस को सुना था दावा किया कि उसने "चतुराई से गढ़ी हुई कहानियाँ" कही थीं। प्रेरित ने इसे खारिज किया। पतरस का दावा इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: "हम जो कह रहे हैं वह अन्यजाति मूर्तिपूजकों के मिथक नहीं हैं। हम वहाँ विद्यमान थे। ये घटनाएं हुई हैं। हम सत्य कह रहे हैं।" हम में से कोई भी सब कुछ के बारे में सत्य नहीं जानता है। निश्चय ही हम परमेश्वर के बारे में संपूर्ण सत्य नहीं जानते हैं। परन्तु फिर भी कुछ बातें हैं जिनके विषय हम निश्चित हो सकते हैं कि वे सत्य हैं। बाइबल परमेश्वर का वचन है। यह सत्य है। नासरत का यीशु मसीह था और है। यह सत्य है। यह सत्य है कि

परमेश्वर ने अपना स्वर्गीय निवास छोड़ा। नासरत का यीशु लोगों के बीच में रहा और उन्हें छुटकारा दिया।

2. *सत्य पर न केवल विश्वास करना है, उसका पालन भी करना है।* हम जान सकते हैं कि उद्धार पाने के लिए हमें क्या करना है। हम जान सकते हैं कि परमेश्वर हम से कैसे जीवन जीने की आशा रखता है। सत्य को मन से समझा जाना है, परन्तु सत्य सिद्धांत से बढ़कर है। वह उससे, जो लोग करते हैं, प्रकट होता है। पौलुस ने लिखा,

> वह [परमेश्वर] हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा (रोमियों 2:6-8)।

एक अन्य स्थान पर इसी प्रेरित ने लिखा, "तुम तो भली भांति दौड़ रहे थे, अब किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो" (गलातियों 5:7)। सत्य ऐसी वस्तु नहीं है जिसका अंगीकार करने के बाद उस की उपेक्षा की जाए। सत्य का आलिंगन करना होता है।

पतरस ने स्पष्ट किया कि उसके लिखने के मुख्य उद्देश्यों में से एक था कि वह अपने पाठकों को उस सत्य का स्मरण करवाए जो परमेश्वर ने उस पर प्रकट किया था। उसने बीते समय में उन्हें सत्य का प्रचार किया था। अब वह उसे उनके मनों में दृढ़ करना चाहता था। "मैं यह अपने लिये उचित समझता हूँ कि जब तक मैं इस डेरे में हूँ, तब तक तुम्हें सुधि दिला दिलाकर उभारता रहूँ" (2 पतरस 1:13)। बाद में उसने आगे लिखा, "हे प्रियो, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूँ, और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूँ" (2 पतरस 3:1)।

बाहर के स्थानों पर एक मत का प्रचलन है कि कलीसिया को लोगों की रुचि और उत्तेजना बनाए रखने के लिए नई-नई बातें करते रहना चाहिए। यह सत्य है कि कुछ लोग अथेने के लोगों के समान होते हैं जो केवल कुछ नया सुनने और सुनाने के लिए ही जीवित रहते हैं (प्रेरितों 17:21)। नई बातों में आकर्षण होता है, परन्तु जिनके अन्दर निरन्तर नई बातों की भूख होती है वे अधिक समय तक किसी भी बात से सन्तुष्ट नहीं रह सकते हैं। परमेश्वर के लोगों के लिए सीखने और पालन करने के लिए रुचिकर होने के लिए बात के नए होने की आवश्यकता नहीं है। पुराना सन्देश भी, यदि किसी की आशाओं और भय से सीधा संबंधित हो, तो वह अरुचिकर नहीं होता है। मेरा एक पुराना मित्र है। मैं उसके साथ हाई स्कूल के समय से बड़ा हुआ हूँ। हम एक साथ डबल-डेट पर जाना और अन्य मूर्खता के कार्य जो जवान पुरुष बहुधा करते हैं, किया करते थे। जब भी हम मिलते हैं, हम उन बातों के बारे में बातें करते हैं। वे हमारे साझा इतिहास का भाग हैं। हमारे जो साझा अनुभव हैं वे हमारे लिए उबाने वाले नहीं हैं। हमें अपने एक साथ होने के समय का आनन्द लेने के लिए कुछ नया करने की कोई

आवश्यकता नहीं होती है।

मसीही एक संयुक्त परिवार के भागीदार हैं। अब्राहम विश्वासियों का पिता है। मूसा ने इस्राएल को व्यवस्था दी। दाऊद उनका राजा था; यशायाह और यिर्मयाह उनके भविष्यद्वक्ता थे। कहानी का अन्त इस सत्य के साथ होता है कि यीशु ही प्रभु है। जब मसीही एकत्रित होते हैं तब वे उन बातों की चर्चा करते हैं जो उनके साझा इतिहास से हैं। उनके पूर्वजों की विश्वासयोग्यता उन्हें विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रेरित करती है। यीशु और पौलुस के प्रचार के अभिलेख विश्वासियों को बताते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे बचाया है। वे यीशु के पुनःआगमन की भरोसे के साथ प्रतीक्षा करते हैं। प्रचारक इस व्यवहार में पड़ सकते हैं कि उन्हें अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ नया और प्रभावशाली करना होगा। नई बातें शीघ्र ही पुरानी हो जाती हैं, परन्तु हमारी साझी कहानी कभी पुरानी नहीं होती है। वह हमें बताती है कि हम कौन हैं। मसीही सिद्धांत और मसीही जीवन सत्य में आधारित हैं।

3. *सत्य परमेश्वर के लोगों को मृत्यु और आने वाले युग के लिए तैयार करता है।* जो प्रभु ने उससे कहा था पतरस ने वह स्मरण किया। अपने आप को सांत्वना तथा आश्वासन के साथ सत्य और सुधि में लपेटने के बाद प्रेरित ने अपनी आनी वाली मृत्यु के विषय बात की। उसने लिखा "... मेरे डेरे के गिराए जाने का समय शीघ्र आनेवाला है, जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझ पर प्रकट किया है" (2 पतरस 1:14)।

प्रेरित ने संभवतः उस घटना का उल्लेख किया जो यूहन्ना 21 में दर्ज है। यीशु क्रूसित हो चुका था। पतरस और अन्य गलील के सागर को लौट गए थे और मछली पकड़ने का अपना पुराना कार्य करने लगे थे। यीशु उनके पास आया और उन्हें प्रोत्साहित किया। उन्होंने पतरस से उसकी भावी मृत्यु के बारे में व्यक्तिगत रीति से बात की। यूहन्ना 21:18, 19 में लिखा है,

> मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तू जवान था, तो अपनी कमर बान्धकर जहां चाहता था, वहां फिरता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बान्धकर जहां तू न चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा। उसने इन बातों से पता दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा।

यह कहा जाता है कि अमेरिका के लोगों के जीवन में, मृत्यु ने निषिध्द विषय होने के लिए सेक्स का स्थान ले लिया है। यह सत्य प्रतीत होता है। सेक्स का परिचय प्राथमिक कक्षाओं से आरंभ हो जाता है, परन्तु मृत्यु के विषय कहीं भी कोई उल्लेख कठिनाई से होता है। यह देखना रोचक है कि मृत्यु से संबंधित परंपराएं कैसे बदल गई हैं। पचहत्तर वर्ष पूर्व यदि किसी का देहान्त होता था तो उसके शव को घर पर पाँच से सात दिन तक रखा जाता था। पड़ौसी साथ में जागरण के लिए आते थे। इसे बदल कर कुछ दिन तक अन्त्येष्टि गृह में मिलने जाना कर दिया गया। मिलने जाने के दिन कम होते चले गए। आज परिवार के

साथ एक दिन से अधिक मिलने का समय भी बहुत कम ही देखने को मिलता है, और बहुधा इतना भी नहीं। अन्त्येष्टियाँ भी बदल गई हैं। दाह-संस्कार अधिक होने लगे हैं। स्मारक सभा गंभीर समय के स्थान पर औपचारिकता हो गई है। हम कल्पना ही कर सकते हैं कि यह सब मृत्यु के बारे में हमारे विचारों को कैसे दर्शाता है। जब कोई मरता है, तो हम जितना शीघ्र हो सके उसे अपने पीछे कर देना चाहते हैं। हम मृत्यु से व्यवहार नहीं करना चाहते हैं। पतरस ने अपने पाठकों से मृत्यु के सत्य का सामना करने को कहा।

पतरस ने अपने प्रस्थान की बात को बिना किसी शोक, और निश्चय ही बिना किसी भय के कहा। मृत्यु स्वाभाविक प्रक्रिया है। परमेश्वर ने हमें ऐसा ही बनाया है। केवल मनुष्य ही मरने वाले नहीं होते हैं। कुत्ते, भेड़, हिरन – सभी जीवित प्राणी मरते हैं। मनुष्यों को जिस बात ने चिंतित किया है वह है कि क्या मनुष्यों की मृत्यु और गाय या घोड़े की मृत्यु एक समान हैं? जब कोई जन मरता है तो क्या उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है? समय के अन्तर्गत, हमारे पास अपने ही संसाधनों के अतिरिक्त और कुछ ना होने के कारण, इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है। यदि हमारे पास मृत्यु के विषय कोई सत्य होना है तो परमेश्वर को ही बताना पड़ेगा। यीशु को मृतकों में से जिला उठाकर, उसने यह स्पष्ट कर दिया है कि मनुष्य की मृत्यु किसी पशु की मृत्यु के समान नहीं है। पुरुष और महिलाएं अनन्तकाल तक जीवित रहेंगे। जीवन एक बाद के संसार में भी ज़ारी रहता है। यह सत्य है।

उपसंहार। बाइबल हर युग के लोगों और परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए सत्य के मध्य ठोस कड़ी है। सत्य जाना जा सकता है। सत्य का पालन होना है। यह सत्य है कि इस संसार के अन्त में एक जवाबदेही होगी। यीशु न्याय करने के लिए फिर से आएगा।

प्रेरणा (1:20, 21)

जब विश्वासी दावा करते हैं कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से है तो समाधान के लिए कठिन प्रश्न उठते हैं। प्रेरणा कैसे कार्य करती है? क्या पवित्रात्मा व्यक्ति के मन को अपनी अधीनता में ले लेता है और उसके द्वारा सन्देश लिखवाता है? प्रेरणा पाए हुए लेखक के अपने स्मरण, शब्दकोष, और अनुभव इस चित्र में कैसे आते हैं?

जॉन स्टॉट की इस विषय पर एक रोचक चर्चा हुई थी।[12] उन्होंने ध्यान करवाया कि कोई भी मसीही दावा कठिनाइयों के बिना नहीं है। कलीसिया के सभी सिद्धांत रहस्य में ढंपे हुए हैं। यह कहना कोई हल्की बात नहीं है कि परमेश्वर सृष्टि में सार्वभौमिक है, वह सृष्टिकर्ता है, या वह उद्धारकर्ता है। हमें उसके सर्वज्ञानी होने को समझने में कठिनाई होती है। यह समझना कठिन है कि परमेश्वर कैसे अपनी सृष्टि के लिए प्रेमी पिता और मानव जाति का न्यायी दोनों हो सकता है। मसीही अपने विश्वास का अंगीकार परमेश्वर की सभी बातों को जाने बिना करते हैं। यदि वे यही प्रतीक्षा करते कि पहले प्रत्येक प्रश्न का निःसन्देह

समाधान हो जाए, तो कोई भी कुछ भी विश्वास नहीं करता। हम विश्वास करने के लिए पर्याप्त जानते हैं। मसीही अपने आप को नासरत के यीशु के प्रति समर्पित करने के लिए उस समय तक की प्रतीक्षा नहीं करते हैं जब तक कि समाधान के लिए कोई प्रश्न शेष नहीं रह जाता।

मसीही होना यीशु के विषय में सार्वभौमिक निर्णय लेना है। उसे प्रभु जानकर हम उसमें अपना विश्वास रखते हैं। जो उन्होंने परमेश्वर के बारे में प्रकट किया है, हम उसपर विश्वास करते हैं। प्रत्येक महत्वपूर्ण विषय पर, बिना सारे उत्तर जाने, हम विश्वास करते हैं। पवित्र-शास्त्र के विषय हमारा विश्वास, इसी रीति से, अन्य विषयों में हमारे विश्वास के समान है। हम दावा करते हैं कि पवित्र-शास्त्र प्रेरणा से है। प्रेरणा क्या है इससे संबंधित प्रश्न बिना कठिनाइयों के नहीं हैं। फिर भी हम दावा करते हैं कि बाइबल पूर्णतः सत्य है। वह विश्वासयोग्य है। यद्यपि मनुष्यों द्वारा लिखी गई है, यह वह प्रकाशन है जो स्वयं परमेश्वर से आया है। वह उसके पुत्र यीशु मसीह की गवाही देती है। प्रकाशन के सभी रहस्यों को जाने बिना, बिना किसी हिचकिचाहट के, हम दावा करते हैं कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से है।

समाप्ति नोट्स

[1]रिचर्ड जे. बॉखम ने पतरस को 2 पतरस का लेखक नहीं माना है, लेकिन उन्होंने यह माना कि लेखक "यूनानी यहूदी साहित्य पर अधिक निर्भर था, जिसने पहले ही यूनानी धर्म और दर्शनशास्त्र के शब्दावली को अपनी लेख में स्थान दिया था ... ।" (रिचर्ड जे. बॉखम, *जूड, 2 पीटर,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यूम 50 [वाको, टेक्सास: वर्ड बुक्स, 1983], 180. पतरस की भाषा का यूनानी यहूदी और अन्य जातिय स्रोत के लिए बॉखम का उदाहरण देखें). [2]एफ. डब्ल्यू. मैट्रौक्स और जॉन मैक्रे ने इस आयत में अपनी पुस्तक का शीर्षक पाया। (एफ. डब्ल्यू. मैट्रौक्स और जॉन मैक्रे, *द इटर्नल किंगडम: ए हिस्ट्री ऑफ द चर्च ऑफ क्राईस्ट* [डिलाईट, अर्क.: गॉस्पल लाईट पबलिशिंग कम्पनी, 1961].) [3]फ्रैड बी. क्रैडौक, *प्रीचिंग* (नैशविल: ऐबिंगडन प्रेस, 1985), 159-63. क्रैडौक ने यह भी लिखा, "प्रचारकों में यह भ्रम है कि परिचित बिना रुचि, बिना सामर्थ्य, और बिना भविष्यवाणी की धार के होता है" (पृष्ठ 45)। [4]इस आयत के लेख को KJV जैसे प्रस्तुत करती है वह समझने में तो सरल है परन्तु मूल लेख से उसकी बहुत कम पुष्टि है। वह यह है, "मैं तुम्हें स्मरण करवाने में कभी लापरवाह नहीं होऊँगा।" [5]देखें माईकल ग्रीन, *द सेकेन्ड ऐपिसल जेनरल ऑफ पीटर एन्ड द जेनरल इपिसल ऑफ जूड,* रिव. ऐड., टिंडेल न्यू टेस्टमेन्ट कॉमेन्ट्रीस, वोल. 18 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन : वम. बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1987), 89. [6]यूनानी शब्द है ἔξοδος *(एक्सोडस)*, जिसका शब्दार्थ है "बाहर जाना।" [7]यूसिबियस *ऐक्लिसियैस्टिकल हिस्ट्री* 3.39.15. [8]पूर्वोक्त., 2.15.2. [9]मत्ती में दिए गए शब्दों का क्रम वही नहीं है जो 2 पतरस में दिया गया है। अंग्रेज़ी व्याकरण यूनानी शब्दों के क्रम में भिन्नता को स्थान नही देती है। इसलिए अनुवाद "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ," अंग्रेज़ी में वैसा ही बनता है। [10]NEB में हाशिए में ऐसे लिखा है: "और भविष्यद्वक्ताओं के सन्देश में हमारे पास कुछ और भी अधिक निश्चित है।"

[11]साथ ही, हम इस पर भी ध्यान दें कि कुछ ऐसे भी हैं जो इस आयत के हवाले से तर्क देते हैं कि किसी को पवित्र-शास्त्र की व्याख्या करनी ही नहीं चाहिए। पवित्र-शास्त्र को, जैसा वह है वैसा ही स्वीकार कर लेना चाहिए, उसकी व्याख्या नहीं करनी चाहिए, ऐसा कहा गया है। यह तर्क पतरस की बात को बिल्कुल नहीं समझता है। जब भी शब्द माध्यम होंगे, चाहे वह पवित्र-शास्त्र हो

या सामान्य वार्तालाप, जो भी उन्हें ग्रहण कर रहा है उसे उनकी व्याख्या करने की आवश्यकता तो पड़ेगी ही। कोई भी बाइबल के शब्दों को जैसे वे हैं वैसे ही अपने अन्दर नहीं सोख सकता है, बिना उनकी व्याख्या किए। [12]जॉन स्टॉट, *द कॉन्टेंप्रेरी क्रिस्चियन* (लीसेस्टर, यू.के.: इन्टर-वैर्स्टी प्रैस, 1992), 178-79.